

# **PARIPEX - INDIAN JOURNAL OF RESEARCH**



**An International Journal**  
**ISSN NO 2250 - 1991**

---

UGC Sr. No. 47432

---

A Peer Reviewed, Referred,  
Refereed & Indexed  
International Journal

---

INDEX COPERNICUS IC VALUE : 79.96

---

Journal DOI : 10.15373/22501991

---

IMPACT FACTOR - 5.761

---

Volume : 6 | Issue : 11 | November-2017 | ₹ 500/-

---

**Journal for All Subjects**



# PARIPEX - INDIAN JOURNAL OF RESEARCH

## Editor In-Chief

Dr. Khansa Memon  
SARA Publishing Academy

## Editorial Advisory Board

Dr. Mathews Plamoottil	Dr. (Ms.) Urmila Shrawankar	Dr. Nitin D Shah
Head of the Department & Assistant Professor in Zoology, Department of Zoology, Baby John Memorial Govt. College, Chavara, Kollam, Kerala	Associate Professor, Department of Computer Science & Engineering, GH Raisoni College of Engineering, RTM Nagpur University	Dean- Gujarat university, Associate Professor & Head, Statistics Department, Prin. M C Shah Commerce College, Ahmedabad
Dr. Mahipal Singh Shekhawat	Dr. Madan Lal Bhasin	Dr. R Ganpathy
Assistant Professor, Biotechnology Laboratory, Mahatma Gandhi Govt. College, Mahe, U.T. of Pondicherry- 605 008	Professor, School of Accountancy, Universiti Utara Malaysia (UUM), Sintok, Kedah, Malaysia	Assistant Professor in Commerce, Directorate of Distance Education, Alagappa University, Karakkudi.
Dr. Alaa Kareem Niamah	Dr. Balasaheb Pawar	Dr. Ranjit Lingaraj
Basrah University, College of Agriculture, Dept. of Food Science, Basrah City, Iraq	Department of Botany, Shri Muktanand College, Gangapur- 431 109.	Associate Professor and Head, Department of Social Work, NCM College, Pollachi
Prof. M. Perumal	Dr. Michael Eskay	Dr. A.R. Saravankumar
Dept. of Economics, Ururu Dhanalakshmi College, Kattur, Trichy-19	Department of Educational Foundations, University of Nigeria, Nsukka.	Assistant Professor in Education DDE, Alagappa University, Tamilnadu

## ADVERTISEMENT DETAILS

## SUBSCRIPTION DETAILS

Position	B/w (Single Color)	Fore Color	Period	Rate	Discount	Amount Payable
Full Inside Cover	₹ 6000/-	₹ 12500/-	One Year (12 Issues)	₹ 3000/-	Nil	₹ 3000/-
			Two Years (24 Issues)	₹ 6000/-	200/-	₹ 5800/-
			Three Years (36 issues)	₹ 9000/-	300/-	₹ 8700/-
Full Page (inside)	₹ 5000/-	-	Five Years (60 issues)	₹ 15000/-	₹ 600/-	₹ 14400/-

You can download the Advertisement / Subscription form from website [www.paripeX.in](http://www.paripeX.in). You will require to print the form. Please fill the form completely and send it to the Editor, PARIPEX - INDIAN JOURNAL OF RESEARCH along with the payment in the form of Demand Draft/Cheque at Par drawn in favour of PARIPEX - INDIAN JOURNAL OF RESEARCH payable at Ahmedabad.

1. Thoughts, language, vision and examples in published research paper are entirely of author of research paper. It is not necessary that both the editor and editorial board agrees with the author. The responsibility of the matter of research paper/article is entirely of author.
2. Editing of the PARIPEX - INDIAN JOURNAL OF RESEARCH is processed without any remittance. The selection and publication is done after recommendations of at least two subject expert referees
3. In any condition if any National/International University denies accepting the research paper published in PIJR, then it is not the responsibility of Editor, Publisher and Management
4. Only the first author is entitle to receive the copies of all co-authors
5. Before re-use of published paper in any manner, it is compulsory to take written permission from the Editor-PIJR unless it will be assumed as disobedience of copyright rules
6. All the legal undertaking related to PARIPEX - INDIAN JOURNAL OF RESEARCH is subject to Ahmedabad Jurisdiction.
7. The research journal will be send by normal post. If the journal is not received by the author of research paper then it will not be the responsibility of the Editor and publisher. The amount for registered post should be borne by author of the research paper in case of second copy of the journal.

Editor,

**PARIPEX - INDIAN JOURNAL OF RESEARCH**

303, Maharana Pratap Complex, Opp. Kapadia Guest House, B/H.V.S. Hospital, Paldi, Ahmedabad - 380006.  
Gujarat (INDIA) | Cell: +91 8866 00 3636, +91 8866 11 3636  
Website : [www.paripeX.in](http://www.paripeX.in) | Email : [editor@paripeX.in](mailto:editor@paripeX.in)

SR. NO.	TITLE	PAGE NO.
1	Impact of Television on the social behaviour of high school children- An experimental study Divya Kumari K.P, Dr. JM Chandunavar	1-2
2	China-Pakistan nexus: Implication on India's Security Dr. Partap Singh	3-5
3	Community Service Learning as a Tool to Enhance Life Skills: A Study among School Children Nirmala, A, Dr. A. Radhakrishnan Nair	6-9
4	POSITION STATEMENT ANALYSIS - A CASE STUDY OF NESTLE INDIA LTD. DR. BINOY ARICKAL	10-12
5	FOREIGN DIRECT INVESTMENT IN INDIA Molra Singh, Amandeep Kaur Hundal	13-18
6	MEDI-CLAIM UTILISATION PRACTICES AMONG THE PATIENTS OF PRIVATE HOSPITALS IN COIMBATORE CITY Mrs. K.S.Uma, Dr. J. Shanmuganandhavadivel	19-21
7	The Local Government System In India: An Overview Vootukuri Nagaraju	22-23
8	EFFECTS OF PSYCHOMOTOR DRILLS WITH PRANAYAMA PRACTICES ON DEPTH PERCEPTION AND EYE HAND CO-ORDINATION AMONG HOCKEY PLAYERS Mr.P.Muthuveera, Dr.A Mahaboobjan	24-25
9	SOFTWARE RELIABILITY - A STUDY Danda Swathi	26-28
10	YATHARTH KA AVCHETAN AUR VYANGYA Dr. Sarita	29-30
11	N-LIST PROGRAMME : A BOON TO USERS OF COLLEGE LIBRARIES Harjinder Singh	31-34
12	Vidhyarthiyo Me Samayojan ki Samasyaya Evam Samadhan Kiran Varma	35-36
13	CONSTITUTION OF INDIA AND LANGUAGES. Samir A. Runja	37-39
14	Status of ST Women of: A Study Dr. G. Sandhya Rani	40-42
15	Micro Finance Through SHG- Bank Linkage Programme in India Archana Sharma, Anil Kumar Srivastava	43-46
16	SELF CONCEPT AND TEACHING COMPETENCY OF ELEMENTARY TEACHER TRAINING STUDENTS Dr R Jeyanthi	47-48
17	Vimudrikaran ka Samajik Evam Aarthik Prabhav Dr. RANINA NEELIMA KACHHAP	49-50
18	A PERSPECTIVE STUDY ON RURAL DEVELOPMENT UNDER GLOBALIZATION - SOME THREATS AND OPPORTUNITIES Mrs.V.KANIMOZHI, Dr.N.KANNAN	51-53
19	ISSUES AND CHALLENGES OF RURAL HEALTH CARE IN INDIA Dr.N.Kannan, A.Arockiyaraj	54-55



ORIGINAL RESEARCH PAPER

Economics

विमुद्रीकरण का सामाजिक एवं आर्थिक प्रभाव

KEY WORDS:

डॉ० रंजना नीलिमा कच्छप

सहायक प्राध्यापक अर्थशास्त्र, शास. नवीन कच्छा महाविद्यालय वेङ्कटपुर, जिला कोरिया (छ.ग.)

ABSTRACT

जब सरकार पुरानी मुद्रा को कानूनी तौर पर बंद करके नई मुद्रा बनाने की घोषणा करती है तो इसे विमुद्रीकरण कहते हैं। इसका उद्देश्य प्रदूषण पर रोक लगाना, आर्थिक स्थिरता, संवर्धन, संवित्त रोग आदि देशों में विमुद्रीकरण का उद्देश्य पर चर्चा नहीं मिल पायी। भारत में भी इन उद्देश्यों की पूर्ति के लिए अब तक दो बार बंद करने की घोषणा की। फलस्वरूप अर्थमय एवं आर्थिक देशों को खबर से पता चलता है कि पूरे देश में अर्थ-तकरी का आत्म नष्ट एवं तथा अर्थव्यवस्था दुर्बल हुई। दूसरी ओर गरीबों व किसानों को परेशानियों का सामना करना पड़ा साथ ही आर्थिक विकास दर में भी के साथ अर्थव्यवस्था में भी गिरावट आई। नोटबंदी आयाम का उद्देश्य -

- 1. विमुद्रीकरण के उद्देश्यों की जानकारी प्राप्त करना।
- 2. विमुद्रीकरण के प्रभावों का अध्ययन करना।

प्रस्तावना

जब सरकार पुरानी मुद्रा (currency) को कानूनी तौर पर बंद कर देती है एवं नई मुद्रा बनाने की घोषणा करती है तो इसे विमुद्रीकरण कहते हैं। दूसरे शब्दों में किसी देश में अर्थमय की एक सामान्य अर्थव्यवस्था खड़ी हो जाती है एवं जल्दी मुद्रा की मात्रा अर्थव्यवस्था में बढ़ जाती है तब नोटबंदी अर्थात् विमुद्रीकरण किया जाता है जिसके अर्थव्यवस्था में तत्काल प्रभाव से बंद कर नई मुद्रा जारी की जाती है। प्रथम काल के आसानी मानकर से लेकर आधुनिक काल के भीतर अर्थव्यवस्था तक नोटबंदी को अर्थव्यवस्था का मुख्य घटक बताया है। जिससे किसी भी देश की अर्थव्यवस्था में नकारात्मक की उत्पत्ति होती है।

विमुद्रीकरण का इतिहास-

1946 में 500 एवं 1000 तथा 10,000 के नोटों को बंद करने का फैसला लिया गया था। 1976 के दशक में भी प्रत्यक्ष कर की जीएस से जुड़ी वंधु कमेटी ने विमुद्रीकरण का सुझाव दिया था किन्तु सुझाव सार्वजनिक होने के कारण नोटबंदी नहीं हो पायी।

1978 में मोरारजी देसाई की जनता पार्टी सरकार ने एक कानून बनाकर 1000, 5000 एवं 10,000 के नोट बंद कर दिये। इससे तत्कालीन गवर्नर आई जी पटेल ने इस बात बंदी का विरोध किया था।

विश्व के आधुनिक इतिहास में नोटबंदी का कदम सबसे पहले अफ्रीकी देश घाना में उठाया गया था। 1982 में टैक्स चोरी व प्रदूषण रोकने के उद्देश्य से 50 SD के नोटों को बंद कर दिया गया था। इससे वहाँ के नागरिकों को अपने ही देश की मुद्रा में विश्वास बढ़ गया था। वहाँ की जनता ने विदेशी मुद्रा एवं जमीन जायदाद का मूल्य लिया जिससे वहाँ शिफ्ट बैंकिंग सिस्टम को बुरासा मुद्रा बन्किंग विदेशी मुद्रा पर कब्जा करती बंद गया।

1984 में माइक्रोविये ने कदम उठाये परिणामस्वरूप कर्जों में वृद्धि व महंगाई तले दबी अर्थव्यवस्था को सहाय नहीं मिल पायी थी।

1987 में म्यांमार कालाबाजार को काटने के उद्देश्य से 80 फीसदी मुद्रा को अर्थव्यवस्था बंद दिया इस कदम के प्रति जनता में काफी नाराजगी एवं गुस्सा दिखाई दिया और यह सफल नहीं हो पाया।

2005 में मनमोहन सिंह की सरकार ने 2005 के पहले के 500 के नोटों का विमुद्रीकरण कर दिया था।

8 नवंबर 2016 को भारत देश में ऐसा ही कुछ देखने को मिला। प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी जी ने एकाएक 5000 एवं 10000 के नोट बंद करने की घोषणा की। सरकार द्वारा देश की जनता को पुराने नोटों को बैंकों से बदलने के लिए समय सीमा भी दी गयी। रिजर्व बैंक ऑफ इंडिया के अनुसार 31 मार्च 2016 तक भारत में 10.42 लाख करोड़ 5000 के बरतार नोट बाजार में थे जिनमें से करीब 14.18 लाख करोड़ 500 एवं 1000 के नोटों के रूप में थे। अर्थात् कुल रूपयों का लगभग 86 फीसदी हिस्सा अमानक बंद कर दिया गया। परिणामस्वरूप घनी वर्गों से लेकर गरीबों तक आतंकवादियों, नक्सलियों तथा हथवाला कारोबारियों में अफस-तकरी पैदा हुई। इसका बड़ा कदम विश्व के इतिहास में पहली बार उठाया गया।

अध्ययन का उद्देश्य -

- 1. विमुद्रीकरण के उद्देश्यों की जानकारी प्राप्त करना।
- 2. विमुद्रीकरण के प्रभावों का अध्ययन करना।

अध्ययन पद्धति - प्रस्तुत शोध पत्र प्राथमिक एवं द्वितीयक अध्ययनों पर आधारित है।

पूर्व शोध-पत्रों एवं विचारों का अध्ययन -

1. शिबी रनील, डा० विवेक मेनी - इन्होंने विमुद्रीकरण एक पैलिमेंटिये या प्लेसको विषय पर अपना शोध पत्र प्रस्तुत किया जिसमें कहा गया है कि विमुद्रीकरण से न केवल देश के भीतर बल्कि पूरे विश्व में रुपये की सर्वाधिकता एवं प्रतिष्ठा में निश्चित ही तेज गिरावट आयी है। यद्यपि विमुद्रीकरण का निर्णय अपरिहार्य रूप से आर्थिक व लोक प्रशासन के वैश्विक सिद्धांतों के रूप में पूर्णतः विफल रहा है। पांच शब्दों के मुनास पर जो परिणाम अर्थ व राजनीतिक अर्थव्यवस्था की ओर इंगारा करते हैं। प्रदूषण उन्मुलन का उद्देश्य बढोत कदमों के मध्यम से नहीं बल्कि अखिरीयर्मा, कानूनों और नियमों के सफलकरण से हासिल किया जा सकता है।
2. डॉ० सुभाष राव - रिजर्व बैंक के पूर्व गवर्नर डॉ० सुभाष राव ने कहा कि नोटबंदी का प्रयोग सकारात्मक प्रभाव। इन्होंने कहा कि अल्पकाल के लिए 500 एवं 1000 के नोटों पर पाबंदी इच्छा को प्रभावित कर सकती है। यदि सरकार और रिजर्व बैंक स्थिति तेजी से प्रभावी तरीकों से स्थिति को प्रबंधन में सफल रहता है उसका जतना ही कम विपरित प्रभाव पड़ेगा। नई मुद्रा के चलन में अपने से सकारात्मक प्रभाव पड़ेगा।
3. डॉ० प्रभाव मुखर्जी - राष्ट्रपति प्रभाव मुखर्जी नोटबंदी के फैसले पर पहले दिन से ही सरकार के साथ हैं। लेकिन सरकार को सागाह किया कि नोटबंदी की वजह से गरीबों की परेशानियों नदी हैं इसलिए यह आवश्यक है कि उन्हें तत्काल प्रभाव से सहायता मुहैया करायी जाय।

विमुद्रीकरण के उद्देश्य -

विमुद्रीकरण के संघर्ष में आम मारणा यह है कि पुरानी मुद्रा को बंद कर नई मुद्रा जारी की जाती है, पर अपनी नजरों से अर्थव्यवस्था में घनी उत्पन्न-उत्पल की स्थिति पहली बार देखने को मिला अतः मन में जिज्ञासा भी उत्पन्न होने लगी कि किन्-किन उद्देश्यों की पूर्ति के लिए मोदी सरकार ने इतना बड़ा कदम उठाया तथा सामान्य जन-जीवन पर इसका कैसा प्रभाव पड़ेगा। अध्ययन से उपलब्ध जानकारी -

1. कालाघन समाप्त करने के लिए - सामान्य तौर पर घरे के पीछे हुए लेन-देन को इन काला घन कहते हैं। मुझे 85 फीसदी रूपये 500 एवं 1000 के नोट के रूप में थे तो अधिकांश लोगों ने काला घन के रूप में इन नोटों को अपने पास रखा होगा। इस घोषणा से काला घन अदम्य हो जायेगा एवं उसी रीथ करने के लिए लोग विभिन्न तरह के उपाय अपना सकते हैं।
2. प्रदूषण पर अंकुश लगाने के लिए - भारतीय अर्थव्यवस्था पर सकारात्मक असर पड़ेगा। इससे कई टारकों से जड़ जमार प्रदूषण से निपटने में सहायता मिलेगी एवं इसमें कमी आयेगी।
3. नकली नोटों को चलन से बाहर करना - नोटबंदी का एक उद्देश्य यह भी है कि जो नकली नोट चलन में ला रहे हैं उनके पास भी 500 एवं 1000 के नकली नोट होंगे वह भी एकाएक बंद हो जायेगा जिससे वह चलन से बाहर हो जायेगा।
4. आतंकवादी गतिविधियों पर अंकुश लगाने के लिए - अर्थव्यवस्था से 86 प्रतिशत मुद्रा अर्थव्यवस्था कर दिया गया। देश में आतंकवादी गतिविधियों भी इन्हीं मुद्राओं के जरिए फल-फूल रहे थे, नोटबंदी होने से इन गतिविधियों पर भी रोक लगायी जा सकेगी।
5. भाव लेन-देन को हतोत्साहित करना - अर्थव्यवस्था में सरकार जनता से एकाएक 85 फीसदी मुद्रा अपने हाथ में ले रही है इससे जनता के हाथों नष्ट

का कम हो गयी। जिससे लेन-देन अंतोस्कारित हुआ एवं वास्तव में कम एवं विकास में गरीब देखी गयी।

**विमुदीकरण के प्रभाव**

1. **विमुदीकरण के सकारात्मक प्रभाव -**
  1. देश में शांति का वातावरण निर्मित - मुद्रा के कारण जो अशांति फैली थी वह रुक सी गयी थी। देश में आतंकी, नक्सली सब ठंडे पड़ चुके थे। इसका फलस्वरूप उदाहरण हमें कश्मीर में शांति का माहौल दिखाई दे रहा था।
  2. जाली नोटों का चलन बंद - विमुदीकरण से जाली नोटों का चलन बंद हो जायेगा और देश की अर्थव्यवस्था मजबूत होगी।
  3. जनता का बैंकों के प्रति जागरूकता में वृद्धि - नोटबंदी के बाद कई ऐसे लोग मिले जिन्होंने कभी एटीएम से पैसे नहीं निकाले थे अब वो एटीएम से पैसे निकालना सीख रहे थे लग कई लोग बैंक नहीं जाते थे अब बैंक जाने लगे थे। इससे जनता में बैंकों के प्रति जागरूकता में वृद्धि हुई।
  4. कर की चोरी पर रोक - हमारे आसो देखे हल है। इतने वर्षों से नई व्यावस्थी एवं लोग भी अपनी आय कम बताकर कम टैक्स देते थे। जिससे सरकार को कम आय की प्राप्ति होती थी। अब नोटबंदी से अपने पास जमा पन बैंक में जमा करने के साथ टैक्स भी देने पड़ रहे हैं। 2016 में साढ़े तीन करोड़ लोगों के पास ही पैन नं० था किन्तु एक साल में इसकी संख्या बढ़कर 33 करोड़ हो गयी। 23 लाख 50 हजार करदाताओं की संख्या 22 हजार 173 करोड़ रुपये टैक्स मसूची टैक्स टैक्स तथा 3 लाख 50 हजार नोटबंदी के बाद करदाता लुढ़के यह स्थिति घत्तीरगत एवं नम प्रदेश की है। इससे सरकार को आय की प्राप्ति होगी एवं देश का विकास होगा।
  5. डिजिटल लेन-देन में वृद्धि - नोटबंदी के कारण जनता के हाथों से नगद मुद्रा छिन सी गयी है। अपनी आवश्यकता की चीजें भी लेने के लिए नगद मुद्रा नहीं थी। ऐसी स्थिति में जनता का रुझान डिजिटल लेन देन की ओर बढ़ता दिखाई दे रहा है। एक साल में बैंक गुना वृद्धि देखी गयी। नोटबंदी के पहले 2016 में 7021 करोड़ साढ़े डिजिटल लेन-देन से हुए थे लेकिन बाद में यह लगभग 113 करोड़ पहुंच गयी।
  6. राजकोषीय घाटे में कमी - विमुदीकरण से लोगों को झुग्गी से पैसा बैंक में जमा हो रहा है एवं जमा पन जिसका पहले कोई लेखा-जोखा नहीं था। अब टैक्स सहित बैंक में जमा होने लगे हैं जिससे राजकोषीय घन में वृद्धि देखी जा रही है जिससे घाटे में कमी आ रही है। कुल कर राजस्व 18 प्रतिशत से बढ़कर 17.1 लाख करोड़ पहुंच गया।
  7. सकल घरेलू उत्पाद में वृद्धि की संभावना- नोटबंदी ने सकल घरेलू उत्पाद का 0.5 प्रतिशत 65 हजार करोड़ रुपये टैक्स के रूप में प्राप्त हो सकती है। जिसका उपयोग आधारभूत ढांचे के निर्माण में किया जा सकता है।
  8. चुनावों में पन का प्रभाव कम होगा क्योंकि नगद मुद्रा की कमी है।
  9. नज्दूर वर्ग दुख था क्योंकि उसका शोषण करने वाले मालिक का काला पन बाहर आ रहा था।
  10. नोटबंदी के बाद 100 दिनों में 2.26 करोड़ नए जनपद खाते खुले तथा तीन महीनों में 19084 करोड़ रुपये त्यागों में जमा हुए।

**विमुदीकरण के नकारात्मक प्रभाव -**

1. **अस्थायी नंदी-विमुदीकरण से जनता के हाथों से नगद मुद्रा ले लिए जाने पर कारोबार एवं व्यवसाय पर विपरित असर दिखाई दे रहा है। जनता द्वारा लेन देन न करने के कारण व्यापारियों के कारोबार में भी चुस्तान नजर आगी एवं कुछ समय के लिए तो ऐसा लगता जैसे मानो अर्थव्यवस्था थम सी गयी है।**
2. **करीबों के हित में नहीं - निम्न तपके के लोगों के पास पहले से ही नोटों की कमी रहती है। किसी प्रकार वे अपना गुजारा करते हैं। नगद मुद्रा भी छिन जाने पर उन्हें भारी मुसीबतों का सामना करना पड़ा। एटीएम से भी 2000 के नोट निकलने से जिनके पास कुछ 2000 रुपये भी न हो तो वह कहाँ से पैसे लाये सग्य ही जिसने पैसे निकाल भी लिए तो वस्तुओं को कम करने में परेशानियों का सामना करना पड़ा।**
3. **बैंरोजगारी में वृद्धि - नोटबंदी का व्यापार व्यवसाय, कारोबार सभी पर विपरित प्रभाव पड़ने के कारण कई लोगों का शोषण छिन गया। बैंरोजगारों के पास पान नहीं होने से आर्थिक तंगी सामने आ रही है साथ ही छोटे कारोबारियों का धंधा प्रभावित होने के कारण वे भी बैंरोजगार हो गये। अर्थव्यवस्था में नोटबंदी के बाद बैंरोजगारी में भी वृद्धि देखी गयी।**
4. **निधि क्षेत्र में गिरावट - आईएफएस मार्केट की अर्थशास्त्री एवं सर्टे रिपोर्ट तैयार करने वाली फीलीथान की लीना ने कहा कि भारतीय सर्विस सेक्टर के लिए 2016 का अंत काफी घीमा रहा है। पीएमआई इंडेक्स के संकेतानुसार इस क्षेत्र की कंपनियों में अक्टूबर-दिसंबर तिमाही की औसत गतिविधियां सात 2014 की शुरुआत के बाद न्यूनतम स्तर पर आ गयी हैं।**
5. **विकास दर का घटना - नोटबंदी के कारण वित्त वर्ष 2016-17 की चौथी तिमाही में जीडीपी प्रोड अर्धत आर्थिक विकास दर घटकर 7.1 फीसदी का अनुमान लगाया गया पर बाद में यह 6.7 फीसदी ही रही। जबकि 2016 में यह 8 फीसदी था।**
6. **ग्रामीणों का शोषण - ग्रामीणों को डिजिटल लेन देन की जानकारी नहीं होने के कारण कई मुश्किलों का सामना करना पड़ रहा है। कई लोगों के खातों से उनकी जानकारी के बिना पैसे दूसरे निकाल ले गये। इस तरह आर्थिक दिक्कतों का सामना करना पड़ रहा है।**
7. **जाली नोटों का चलन बंद न होना - यह प्रभाव से निम्न है...**

- जाली नोटों का चलन बंद हो गया पर अर्थव्यवस्था में जाली नोटों का चलन बंद नहीं हुआ एवं 500 एवं 2000 के जाली नोटों का चलन प्रारंभ हो गया।
8. **कृषक वर्गों पर विपरित प्रभाव - किसान वर्ग दुखी था क्योंकि वह अपनी फसल के लिए वीर सामाजिक खाद, कीटनाशक दवाईयों को खपते थे प्रभाव में आसानी से नहीं खरीद पा रहा था। शक्ति पूंजी भी खतर में नजर आ रही थी क्योंकि लोगों का खाता बैंक में नहीं था।**
9. **महिलाओं की स्थिति पर विपरित प्रभाव - महिलाओं द्वारा छिपाकर 500 एवं 1000 के नोट जो बचाकर रखे गये थे उस पर विपरित प्रभाव पड़ा। बचत खाता बैंक में जमा कान्नी पड़ी जो अब तक खड़ी लाइन नहीं पा सकी।**
10. **पर्यटन उद्योग पर विपरित प्रभाव - नोटबंदी के कारण पर्यटन उद्योग पर विपरित प्रभाव पड़ा क्योंकि विदेशी सैलानियों की आयक देश में कम देखी गयी।**
11. **हाउसिंग लोन की प्रोड में कमी आयी, ब्याज दर में कमी आयी।**

**निष्कर्ष -**

विमुदीकरण से पूरी अर्थव्यवस्था में उत्थत-पुथत सी गय गयी। यह कहना अतिशयोक्ति नहीं होगा कि अर्थव्यवस्था में नव जीवन की उत्पत्ति हुई है। इससे डिजिटल लेन-देन में वृद्धि हुई, कर चोरी पर प्रतिबंध, बैंकों के प्रति जागरूकता, राजकोषीय घाटे में कमी, सकल घरेलू उत्पाद में वृद्धि आदि के रूप में सकारात्मक प्रभाव पड़े एवं कृषक वर्ग, पर्यटन उद्योग, ग्रामीणों का शोषण, विकास दर का घटना, बैंरोजगारी में वृद्धि, निजी क्षेत्रों में गिरावट के रूप में नकारात्मक प्रभाव पड़े हैं। अर्थव्यवस्था में सारे काम काज प्रभावित हुए हैं पर धीरे धीरे नई मुद्रा के चलन में आने से अर्थव्यवस्था में गति आती दिखाई दे रही है ऐसा माना जा रहा है कि नोट बंदी से सगठित क्षेत्र का विस्तार होगा एवं संघोपाल में इसके फायदे देश को मिलेंगे। वर्तमान में नकदी पर अंकुश एवं कर अनुपालन में सुधार से सरकार का खजाना भरता नजर आ रहा है। अपने से अक्टूबर के दौरान प्रवर्ष कर संग्रह में 15.2 प्रतिशत की वृद्धि हुई है।

**सुझाव -**

1. **छोटे नोटों की संख्या में वृद्धि करनी चाहिए-** सरकार को छोटे नोटों की संख्या में वृद्धि करनी चाहिए। ताकि नगद मुद्रा गतिव उपभोक्ता के हाथों तक पहुंच सके। जिससे वे अपनी अनिवार्य आवश्यकताओं की चीजों को खरीद सकें।
2. **शोषणार उन्मूलन कार्यकर्मों पर ज्यय-** शोषणार उन्मूलन कार्यकर्मों पर अधिक ध्यय करना चाहिए जिससे बढ़ती बैंरोजगारी पर अंकुश लगाया जा सके एवं पैसे गरीबों के हाथों तक पहुंच सके। शायद मनरेगा पर 38 हजार करोड़ से 46 हजार करोड़ रुपये बजट में देने की यही संझा सरकार की है।
3. **डिजिटल लेन-देन के लिए लोगों को जागरूक करना -** डिजिटल लेन-देन के लिए लोगों को जागरूक करने की आवश्यकता है ताकि वे आसानी से एवं स्वयं द्वारा लेन-देन कर सकें एवं किसी भी प्रकार से शोषण के शिकार न हों।
4. **ध्रष्टाचार उन्मूलन के लिए कानूनों व नियमों का त्रतीकरण किम्ब जना आवश्यक है।**

**संदर्भ ग्रंथ**

1. नई दुनिया 6 जनवरी 2017, पृष्ठ नं० 1 एवं 2। 8 नवम्बर 2017 पृष्ठ नं० 21
2. नवभारत, 7 जून 2017, पृष्ठ नं० 4। 8 नवम्बर 2017 पृष्ठ नं० 1।
3. दैनिक भास्कर, 8 नवम्बर 2017 पृष्ठ नं० 1।
4. अज्ञात, प्रमोद कुमार (2016) उदय इंडिया, विमुदीकरण का भारत की अर्थव्यवस्था पर प्रभाव।
5. <http://thehindu.com>
6. <http://www.tbs.com/india/india-37974244>

# Naveen Shodh Sansar

(An International Multidisciplinary Refereed Journal)  
(U.G.C. Approved Journal)



# नवीन शोध संसार

Editor - Ashish Narayan Sharma

Office Add. "Shree Shyam Bhawan", 795, Vikas Nagar Extension 14/2, NEEMUCH (M.P.) 458441, (INDIA)  
Mob. 09617239102, Email : nssresearchjournal@gmail.com, Website www.nssresearchjournal.com

22. GST And Its Social Economical Impact On Indian Market (Pankaj Kushwah) .....	61
23. Role Of Youth In Product Promotion Through Social Networking Sites .....	63
(Dr. Vikas Jain, Nafees Uddin Siddiqui)	
24. निमाड क्षेत्र में पर्यटन उद्योग विकास एवं संभावनाएँ (शिल्पी गुप्ता) .....	66
25. भू-राजस्व प्रवृत्तियों का आलोचनात्मक अध्ययन - इंदौर जिले के संदर्भ में (डॉ. आशीष पाठक, शीतल सोलंकी) .....	69
26. बैंकों की गैर निष्पादनकारी सम्पत्तियों (एनपीए) का प्रवन्ध (दिवाला एवं शोधन अराक्षमता संस्था (Insolvency and Bankruptcy Code) 2016 के विशेष सन्दर्भ में) (डॉ. मनोज महाजन)	72
27. ग्रामीण बैंकों के माध्यम से रोजगार एवं राख की पूर्ति - एक अध्ययन (बडवानी जिले के संदर्भ में) .....	75
(ज्योति भरडे, डॉ. सपना सोनी)	
28. कृषि विकास की चुनौतियाँ (डॉ. कृष्ण कुमार साकेत) .....	78
29. मध्य प्रदेश के बडवानी जिले में विशेष केन्द्रीय सहायता, शासकीय योजना से लाभान्वित अनुसूचित जनजाति .....	80
हितग्राहियों का आर्थिक अध्ययन (डॉ. एन. एल. गुप्ता, जयराम बघेल)	
30. जल विविधता और आर्थिक विकास (डॉ. दयाराम साहू) .....	82
31. भारत में बैंकिंग विकास की अवस्थाएँ (दीपिका यादव) .....	84
32. भारत के विकास में महानदी कोलफील्ड लिमिटेड की भूमिका (डॉ. दीपचंद भावरकर) .....	86
33. जटल सिटी ट्रांसपोर्ट सर्विस लिमिटेड (लाभदायकता और सामाजिक उत्तरदायित्व पूर्ति हेतु सुझाव) (डॉ. धीरज शर्मा) .....	88
34. आर्थिक विकास के पर्यावरणीय मुद्दे (क्रितिका सिंह, रूपेश द्विवेदी) .....	90
35. Sustainable Environment Development (Dr. Rashmi Gupta) .....	91
36. शासकीय रोजगार योजनाओं के अंतर्गत अनुसूचित जाति एवं जनजाति के युवाओं को उद्यमिता के माध्यम .....	93
से रोजगार के अवसर (अजाय खातरकर)	
37. मुद्रा स्फीति तथा मूल्य वृद्धि का विभिन्न उपभोक्ता वर्गों पर प्रभाव (डॉ. रंजना नीलिमा कच्छप) .....	95
38. भारत में सूचना प्रौद्योगिकी उद्योग का वर्तमान परिदृश्य विकास एवं चुनौतियाँ (डॉ. निशा मिश्रा, मोनिका मिश्रा) .....	101
39. सामाजिक, आर्थिक, धार्मिक और भाषायी विविधता तथा भारतीय संविधान (डॉ. संजय कुमार साकेत) .....	105
40. आर्टिनेस फक्ट्री जबलपुर में कार्यरत श्रमिकों का रोजगार एवं कार्य की दशाओं का अध्ययन - वर्तमान परिपेक्ष में ...	108
(डॉ. सुनीता कुशवाहा)	
41. टाइगर रिजर्व में पारिस्थितिकी पर्यटन के प्रभाव का आर्थिक विश्लेषण - सतपुड़ा टाइगर रिजर्व के सन्दर्भ में .....	111
(डॉ. आर. डी. सिंह, श्रद्धा मोररिया)	
42. भारतीय अर्थव्यवस्था में विपुत्रीकरण 'प्रभाव एवं भविष्य' (डॉ. प्रमोद भारतीय) .....	115
43. क्षेत्रीय ग्रामीण बैंक के हितग्राहियों का आर्थिक मूल्यांकन (मध्यांचल ग्रामीण बैंक के विशेष संदर्भ में) .....	119
(शिल्पी श्रीवारस्तव, डॉ. एस.एस. विजयवर्गीय)	
44. विश्व व्यापार संगठन (WTO) एवं भारतीय कृषि - चुनौतियाँ एवं संभावनाएँ (डॉ. ए. के. पाण्डेय, डॉ. गरिमा सिंह) .....	122

## मुद्रा स्फीति तथा मूल्य वृद्धि का विभिन्न उपभोक्ता वर्गों पर प्रभाव

डॉ. रंजना नीलिमा कच्छप \*

**शोध सारांश** - विश्व के अधिकांश देशों के सामने गरीबी, बेरोजगारी, असमानता जैसी समस्याओं के साथ-साथ मुद्रा स्फीति तथा महंगाई की समस्याएँ भी विद्यमान हैं। देश की जनता अपनी सरकार से मांग करती है कि उसे कम मूल्य पर दैनिक उपभोग की वस्तुएँ मुहैया करायी जाय। लोग आय में वृद्धि की मांग करते हैं। पर विकारशील देशों में धन की कमी के कारण सफलता नहीं मिलती। घाटे की अर्थव्यवस्था के कारण सरकार उस घाटे को अधिक नोट छापकर पूरा करती है। जिससे मुद्रा की मात्रा बढ़ जाती है एवं मुद्रा प्रसार के कारण महंगाई बढ़ जाती है। भारतीय अर्थव्यवस्था में देखा जाय तो नोटबंदी के बाद मुद्रा की मात्रा में कमी आयी थी किन्तु अब धीरे धीरे अर्थव्यवस्था पटरी पर आ गयी। नोटों की पर्याप्तता के साथ जीकरीपेशा वर्ग की आय में वृद्धि होने के साथ मुद्रा की मात्रा व महंगाई दोनों में वृद्धि देखी जा सकती है। रसोई गैस, पेट्रोल, खाद्य पदार्थों की कीमतों में निरंतर वृद्धि हो रही है। देश में विभिन्न आय वर्ग के लोग रहते हैं जैसे - उच्च आय, मध्यम आय तथा निम्न आय वर्ग। बढ़ती महंगाई गरीब जनता का पेट काटती है, मध्यम वर्ग की आवश्यकताओं में कटौती करती है तथा धनी वर्ग के लिए आय का स्रोत उत्पन्न करती है। सभी वस्तुओं के मूल्य इतनी तेजी से बढ़ रहे हैं कि आम आदमी का जीवन निर्वाह दूभर होता जा रहा है। मूल्य वृद्धि का कारण उत्पादन में कमी, सिंचाई सुविधाओं का अभाव, गोदामों में अनाजों का सड़ना तथा कालाबाजारी एवं वस्तुओं की मांग पूर्ति में असंतुलन आदि पाया गया। अध्ययन से पता चलता है कि मुद्रा की मात्रा, उपभोक्ताओं की आय, खाद्य पदार्थों एवं सब्जियों तथा ईंधन के मूल्य में वृद्धि हुई है तथा उपभोक्ताओं की वारस्तविक आय एवं वस्तुओं को उपभोग करने की क्षमता कम हुई।

**प्रस्तावना** - किसी भी देश या राज्य के आर्थिक विकास में वहाँ रहने वाली जनता का महत्वपूर्ण योगदान होता है। 'मुद्रा स्फीति या मुद्रा प्रसार आधुनिक आर्थिक अर्थव्यवस्था का एक महत्वपूर्ण तत्व है। एक सीमा तक मुद्रा स्फीति मानव के लिए लाभदायक है तो एक सीमा के बाद यह खतरनाक अभिशाप हो। लगभग अर्थों में देखा जाय तो मुद्रा स्फीति वह वजह है जिसमें वस्तुओं एवं सेवाओं की कीमतें बढ़ती हैं तथा मुद्रा का मूल्य घटता है।' साधारण शब्दों में इसे तो मुद्रा की कीमत में कमी होना मुद्रा स्फीति है इसे महंगाई भी कह सकते हैं अर्थात् वस्तु की कीमत में वृद्धि होना और मुद्रा की कीमत कम होना उदाहरण के तौर पर कहा जा सकता है कि छ: महीने पहले देखा जाय तो एक लीटर मिलेण्डर एवं एक लीटर पेट्रोल खरीदने के लिए हमें क्रमशः 600 रु 0 व 62 रु 0 देने होते थे वर्तमान में उन्हीं वस्तुओं को खरीदने के लिए क्रमशः 800 रु 0 व 72 रु 0 देने पड़ रहे हैं। अतः हम कह सकते हैं कि महंगाई बढ़ गयी है।

### मुद्रास्फीति के कारण-

1. जब किसी वस्तु की मांग अधिक हो जाती है जबकि उस वस्तु की उत्पादकता कम होती है तो इससे उस वस्तु की कीमत बढ़ जाती है जिससे महंगाई बढ़ जाती है।
2. किसी वस्तु की लागत में वृद्धि होने पर उसका मूल्य बढ़ जाता है तो इससे वह वस्तु सामान्य कीमत से अधिक मूल्य पर उपभोक्ता को प्राप्त होती है। जिसका सीधा असर मुद्रा स्फीति पर होता है।
3. यदि किसी देश की जनता के पास खर्च करने के लिए अधिक पैसे होंगे तो वह अधिक वस्तुओं को खरीदेगा और वस्तुओं में कमी आयेगी तथा कीमतें बढ़ेंगी।

### भारत में मुद्रा स्फीति दर -

### हालिया रिलीज़ -

**सितंबर में भारत मुद्रास्फीति दर अपरिवर्तित** - सितंबर 2017 में भारत का उपभोक्ता मूल्य सूचकांक 3.28 प्रतिशत बढ़कर सालाना आधार पर आया, जो पिछले महीने के पांच महीने के उच्चतम और बाजार की अपेक्षा 3.6 प्रतिशत से कम है। बाजार मुद्रास्फीति में गिरावट आई, जबकि आवास, ईंधन और कपड़ों के लिए तेजी से कीमतें बढ़ गईं। 2017-10-12 आठवें प्रकाशित।

**अगस्त में 5 माह के उच्च स्तर पर भारत की मुद्रास्फीति दर** - जुलाई में 2.36 प्रतिशत और 3.2 प्रतिशत की बाजार अपेक्षाओं के बाद भारत में उपभोक्ता कीमतों में अगस्त, 2017 के अगस्त माह में 3.36 प्रतिशत की वृद्धि हुई। यह मार्च के बाद से उच्चतम मुद्रास्फीति की दर है, खाद्य कीमतों में पुनः भारतीय रिजर्व बैंक को उम्मीद है कि इस वित्त वर्ष (अप्रैल से सितंबर 2017) की पहली छमाही में 3.5 प्रतिशत - 3.5 प्रतिशत - दूसरी छमाही में 4.5 प्रतिशत (अक्टूबर 2017 से मार्च 2018)। 2017-09-12 पर प्रकाशित।

**जुलाई में भारत में मुद्रास्फीति दर बढ़कर 2.36% हो गई है** - जुलाई 2017 में भारत के उपभोक्ता कीमतों में सालाना आधार पर 2.36 प्रतिशत की वृद्धि हुई, जो कि बाजार की अपेक्षा 1.87 प्रतिशत और पिछले महीने 1.54 प्रतिशत बढ़कर रही। आवास, उर्जा और कपड़ों की कीमतों आगे बढ़ गईं और खाद्य कीमतों में नरम गति से गिरावट आई। 2017-08-14 को प्रकाशित।

**भारत में मुद्रास्फीति दर 1.54% की ताजा कम** - भारत में उपभोक्ता कीमतों में जून में 2017 में 1.54 प्रतिशत की वृद्धि हुई, जो मई में 2.18 प्रतिशत की वृद्धि और 1.7 प्रतिशत बाजार अपेक्षाओं के मुकाबले तेजी से

\* सहायक प्राध्यापक (अर्थशास्त्र) शासकीय नवीन कन्या महाविद्यालय, वैकुण्ठपुर, जिला - कोरिया (छ.ग.) भारत



को बढ़ावा देने के लिए एक नया रिपोर्ट का है।

**(हाथ डेरी आने पर)**

हाथ डेरी आने पर भारत की जीडीपी में वृद्धि में भारी गिरावट आई है। 2017 में भारत की जीडीपी में वृद्धि 7.1% रही। जबकि दुनिया की औसत वृद्धि दर 3.9% रही। भारत की जीडीपी में वृद्धि में भारी गिरावट आई है। 2017 में भारत की जीडीपी में वृद्धि 7.1% रही। जबकि दुनिया की औसत वृद्धि दर 3.9% रही। भारत की जीडीपी में वृद्धि में भारी गिरावट आई है। 2017 में भारत की जीडीपी में वृद्धि 7.1% रही। जबकि दुनिया की औसत वृद्धि दर 3.9% रही।

जब से देश में वृद्धि दर गिरावट आई है। 2017 में भारत की जीडीपी में वृद्धि 7.1% रही। जबकि दुनिया की औसत वृद्धि दर 3.9% रही। भारत की जीडीपी में वृद्धि में भारी गिरावट आई है। 2017 में भारत की जीडीपी में वृद्धि 7.1% रही। जबकि दुनिया की औसत वृद्धि दर 3.9% रही। भारत की जीडीपी में वृद्धि में भारी गिरावट आई है। 2017 में भारत की जीडीपी में वृद्धि 7.1% रही। जबकि दुनिया की औसत वृद्धि दर 3.9% रही।

देश में वृद्धि दर गिरावट आई है। 2017 में भारत की जीडीपी में वृद्धि 7.1% रही। जबकि दुनिया की औसत वृद्धि दर 3.9% रही। भारत की जीडीपी में वृद्धि में भारी गिरावट आई है। 2017 में भारत की जीडीपी में वृद्धि 7.1% रही। जबकि दुनिया की औसत वृद्धि दर 3.9% रही। भारत की जीडीपी में वृद्धि में भारी गिरावट आई है। 2017 में भारत की जीडीपी में वृद्धि 7.1% रही। जबकि दुनिया की औसत वृद्धि दर 3.9% रही।

देश में वृद्धि दर गिरावट आई है। 2017 में भारत की जीडीपी में वृद्धि 7.1% रही। जबकि दुनिया की औसत वृद्धि दर 3.9% रही। भारत की जीडीपी में वृद्धि में भारी गिरावट आई है। 2017 में भारत की जीडीपी में वृद्धि 7.1% रही। जबकि दुनिया की औसत वृद्धि दर 3.9% रही।

अर्थव्यवस्था की आवश्यकताएं हैं। 2017 में भारत की जीडीपी में वृद्धि 7.1% रही। जबकि दुनिया की औसत वृद्धि दर 3.9% रही। भारत की जीडीपी में वृद्धि में भारी गिरावट आई है। 2017 में भारत की जीडीपी में वृद्धि 7.1% रही। जबकि दुनिया की औसत वृद्धि दर 3.9% रही।

जिस समाज में मानव विकास करता है वहां विभिन्न वर्ग के लोग रहते

हैं। अर्थव्यवस्था में वृद्धि दर गिरावट आई है। 2017 में भारत की जीडीपी में वृद्धि 7.1% रही। जबकि दुनिया की औसत वृद्धि दर 3.9% रही। भारत की जीडीपी में वृद्धि में भारी गिरावट आई है। 2017 में भारत की जीडीपी में वृद्धि 7.1% रही। जबकि दुनिया की औसत वृद्धि दर 3.9% रही।

**अध्ययन का उद्देश्य -**

1. बढ़ती महंगाई के कारण उपभोक्ता वर्ग की वित्तीय स्थिति पर पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन करना।
2. बढ़ती महंगाई के कारण उपभोक्ता वर्ग के वस्तुओं के उपयोग प्रवृत्ति पर पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन करना।
3. बढ़ती महंगाई के कारणों का अध्ययन करना।

**पूर्व शोध साहित्यों का अध्ययन -**

1. टूटेजा, उषा (दिसम्बर, 2008) - इन्होंने अपने अध्ययन में बरीबों की दशा का वर्णन किया है, खाद्य पदार्थों में मुद्रा स्थिति अर्थात् महंगाई बढ़ने से उनकी स्थिति खराब हो जाती। इसलिए सरकार को इस स्थिति में निरोधन लाने के लिए उपाय निकालना चाहिए। मुद्रा स्थिति से अर्थव्यवस्था के विकास में लाभ होगा। लेकिन गरीब वर्ग अपनी आय का 60-70% भोजन पर खर्च करता है। नीति निर्माताओं को धरेलू उत्पादन बढ़ाने के बारे में सोचना चाहिए जिससे खाद्य मुद्रा स्थिति का निराकरण किया जा सके।
2. सिमर, मेलाणी - इनका अध्ययन मुद्रा स्थिति और आर्थिक विकास के बीच संबंध एक अनुभवजन्य विश्लेषण पर आधारित है इन्होंने कहा कि मुद्रा स्थिति में वृद्धि का मतलब है कीमतों में वृद्धि। मुद्रा स्थिति में वृद्धि से पैसे की क्रयशक्ति कम हो जाती है। जिससे उपभोग घटता है तथा जीडीपी में भी गिरावट आती है। इससे भुगतान संतुलन भी प्रभावित होता है क्योंकि निर्यात अतिक्रमण हो जाता है। फिलिप्स यह बताता है कि उच्च मुद्रा स्थिति बेरोजगारी की दर को बढ़ाती है जिसका आर्थिक विकास पर नकारात्मक प्रभाव पड़ता है।
3. कीन्स, जे.एम. - कीन्स ने मुद्रा स्थिति की व्याख्या समाज की कुल व्यय तथा वस्तुओं एवं सेवाओं की उपलब्ध मात्रा के संबंध में की है। जब किसी देश में मुद्रा की मात्रा बढ़ती है तो लोगों की मौद्रिक आय भी बढ़ती है। मौद्रिक आय बढ़ने से आम जनता का व्यय भी बढ़ जाता है। इससे जीडीपी में वृद्धि की प्रवृत्ति होती है। यदि व्यय सामान्य मौद्रिक आय तथा वस्तुओं एवं सेवाओं की मात्रा दोनों एक ही अनुपात में बढ़ता है तो कीमत स्तर में वृद्धि नहीं होती है। किन्तु वस्तुओं व सेवाओं की तुलना में व्यय सामान्य मौद्रिक आय अधिक अनुपात में बढ़ता है तो कीमत स्तर बढ़ने लगता है।

जे.एम. कीन्स की बातें कुछ हद तक सही साबित होती दिखाई देती हैं। उदाहरण के लिए यदि अर्थव्यवस्था में देखा जाय तो कई उपभोक्ता वस्तुओं की कीमतों में वृद्धि दिखाई देती है। इससे यह कहा जा सकता है कि महंगाई बढ़ रही है। लोगों की मौद्रिक आय में निश्चित ही वृद्धि हुई है। जौकरी पेशा कार्यवाहियों की वेतन वृद्धि हुई है साथ-साथ वेतनमान लागू होने के बावजूद कामियों दोषों की बात करें तो मान्यता यौजना ने माजदूरों के जीवन स्तर में परिवर्तन लाया है। साथ ही निरंतर जनसंख्या में वृद्धि देखी जा सकती है जिसके कारण वस्तुओं की मांग में वृद्धि देखी जा सकती है।

उपरोक्त शोध साहित्यों के अध्ययन से पता चलता है कि समग्र-समय पर मुद्रा स्थिति भारत में देखी जाती जिसके कारण वस्तुओं के मूल्य में वृद्धि हुई जिसका प्रभाव विभिन्न उपभोक्ता वर्गों पर पड़ा है। सबसे अधिक प्रभाव गरीब वर्ग पर पड़ता है। इस समय खाद्य पदार्थों के मूल्य में वृद्धि देखी जाती

...के कारण है कि मुद्रा की मांग में वृद्धि होनी चाहिए। ...  
 ...के कारण है कि मुद्रा की मांग में वृद्धि होनी चाहिए। ...  
 ...के कारण है कि मुद्रा की मांग में वृद्धि होनी चाहिए। ...

1. **अव्यय का क्षेत्र** - इसके लिए विचारणाएं कि मुद्रा के क्षेत्र को बढ़ाया जाए।

2. **कारवाहियों का वृद्ध** -

1. उच्च आय वर्ग द्वारा 20 प्रतिशत तक बढ़ावा देना।
2. मध्यम आय वर्ग 20 प्रतिशत तक बढ़ावा देना।
3. निम्न आय वर्ग 20 प्रतिशत तक बढ़ावा देना।
3. उच्च उतारना हेतु मुद्रा की मांग को बढ़ावा देना।

4. **संशोधित व्ययों का संशोधित विश्लेषण एवं अनुसंधान** -

समाप्त होता - इसका अवकाश दिनांक 17 से अक्टूबर 18 के बीच समाप्त 80 दिनों में पूर्ण किया गया।

**व्ययों में वृद्धि का कारण** -

1. **व्ययों में वृद्धि की स्थिति** - उच्च आय वर्ग के व्ययों में वृद्धि होनी चाहिए।

**तानिका क्रमांक 1 (देखें अन्तिम पृष्ठ पर)**

तानिका के विश्लेषण से पता चलता है कि व्ययों में वृद्धि होनी चाहिए। ...

2. **व्ययों में वृद्धि की स्थिति** - उच्च आय वर्ग के व्ययों में वृद्धि होनी चाहिए।

**तानिका क्रमांक 2 (देखें अन्तिम पृष्ठ पर)**

तानिका से स्पष्ट है कि 100 प्रतिशत उतारनाओं ने कहा कि व्ययों में वृद्धि होनी चाहिए।

3. **मुद्रा की मांग में वृद्धि होना** - विमुद्रीकरण के कारण धोके समय के लिए अर्थव्यवस्था में मुद्रा की मांग बढ़नी चाहिए।

**तानिका क्रमांक 3 (देखें अन्तिम पृष्ठ पर)**

तानिका से स्पष्ट है कि मुद्रा की मांग में वृद्धि होनी चाहिए। ...

4. **मुद्रा की मांग में वृद्धि होना** - विमुद्रीकरण के कारण धोके समय के लिए अर्थव्यवस्था में मुद्रा की मांग बढ़नी चाहिए।

**तानिका क्रमांक 4 (देखें अन्तिम पृष्ठ पर)**

तानिका से स्पष्ट है कि उच्च आय वर्ग के उतारनाओं में 80 प्रतिशत उतारनाएं हैं कि व्ययों में वृद्धि होनी चाहिए।

5. **मुद्रा की मांग में वृद्धि होना** - विमुद्रीकरण के कारण धोके समय के लिए अर्थव्यवस्था में मुद्रा की मांग बढ़नी चाहिए।

**तानिका क्रमांक 5 (देखें अन्तिम पृष्ठ पर)**

तानिका से स्पष्ट है कि उच्च आय वर्ग के उतारनाओं में 100 प्रतिशत उतारनाओं ने कहा कि व्ययों में वृद्धि होनी चाहिए।

**मुद्रा की मांग में वृद्धि होना** -

1. **मुद्रा की मांग में वृद्धि होना** - विमुद्रीकरण के कारण धोके समय के लिए अर्थव्यवस्था में मुद्रा की मांग बढ़नी चाहिए।
2. **मुद्रा का मूल्य कम होना** - मुद्रा की मांग बढ़ने से मुद्रा के मूल्य में गिरावट आ सकती है।

**तानिका क्रमांक 6 (देखें अन्तिम पृष्ठ पर)**

3. **उत्पादन में वृद्धि** - उच्च उत्पादों के उत्पादन में वृद्धि आनी चाहिए।

**तानिका क्रमांक 7 (देखें अन्तिम पृष्ठ पर)**

तानिका से स्पष्ट है कि 100 प्रतिशत उतारनाओं ने कहा मुद्रा का मूल्य कम हुआ है।

4. **व्ययों में वृद्धि** - उच्च व्ययों के उत्पादन में वृद्धि आनी चाहिए।

5. **मुद्रा का मूल्य कम होना** - मुद्रा की मांग बढ़ने से मुद्रा के मूल्य में गिरावट आ सकती है।

6. मंडियों में अनाज का संचयन - इसी तरह प्याज का स्टोरेज सही ढंग से नहीं होने के कारण, तथा अनाज का रख-रखाव ठीक न होने के कारण मंडियों में अनाज सड़ जाते हैं तथा बाजार में उसकी आपूर्ति कम होने से मूल्य में वृद्धि हो जाती है।

6. गोदाम में स्टॉक - कुछ व्यापारी वस्तुओं का भारी स्टॉक गोदाम में रख लेते हैं जिससे भी वस्तुओं की पूर्ति बाजार में कम हो जाती है।

7. मांग व पूर्ति में असंतुलन - जितनी मात्रा में वस्तुओं की मांग बाजार में हो रही है उससे कम मात्रा में वस्तुओं की पूर्ति होना मूल्य वृद्धि के कारणों में से एक है।

**शोध अध्ययन के प्राथमिक आंकड़ों के विश्लेषण से प्राप्त निष्कर्ष -**

1. विमुदोकरण के कारण अर्थव्यवस्था में मुद्रा की कमी दिखाई दे रही थी किन्तु वर्तमान में मुद्रा की मात्रा में वृद्धि देखी जा सकती है।

2. आय संबंधी जानकारी लेने पर पाया गया कि तीनों ही आय वर्ग के उपभोक्ताओं की आय में वृद्धि हुई है। किसी को सातवां वेतनमान मिला तो किसी को महंगाई भत्ता किसी न किसी रूप में वेतन वृद्धि हुई है। अध्ययन में 100 प्रतिशत उत्तरदाताओं ने कहा कि वेतन में वृद्धि हुई है। इससे पता चलता है कि मुद्रा की मात्रा में वृद्धि हुई है। अतः अर्थव्यवस्था में मुद्रा रफ़ाति देखी जा सकती है।

3. वस्तुओं के मूल्य वृद्धि के संबंध में जानकारी लेने पर पाया गया कि 100 प्रतिशत उत्तरदाताओं ने कहा खाद्य पदार्थों, रसोई गैस, पेट्रोल, एवं सव्जियों के मूल्य में वृद्धि हुई है।

4. वस्तुओं के उपभोग करने की प्रवृत्ति के संबंध में जानकारी लेने पर सबसे अधिक निम्न आय वर्ग पर प्रभाव पड़ा। 100 प्रतिशत उत्तरदाताओं ने कहा कि उनकी उपभोग प्रवृत्ति कम हुई है। खाने में टमाटर की घटती का स्वाद भूल गये हैं। प्याज का उपयोग नहीं कर रहे हैं तथा एल पी जी गैस का उपयोग न करके चूल्हे पर खाना बना रहे हैं। उच्च आय वर्ग के उपभोक्ताओं पर कोई प्रभाव नहीं पड़ा क्योंकि आय अधिक होने से वस्तुओं के मूल्य में वृद्धि होने पर उनका उपयोग वे पहले जैसा ही करते हैं जबकि मध्यम आय वर्ग के 60 प्रतिशत उपभोक्ताओं ने कहा कि उपयोग कर दिये हैं जबकि 40 प्रतिशत ने कहा कि कोई प्रभाव नहीं पड़ा है।

5. मूल्य वृद्धि का उपभोक्ता की वास्तविक आय और खर्च पर प्रभाव की जानकारी लेने पर पाया गया कि उच्च आय वर्ग के उत्तरदाताओं में 50 प्रतिशत उत्तरदाता यह मानते हैं कि वस्तुओं के मूल्य बढ़ने से वास्तविक आय कम हुई है तथा 20 प्रतिशत उत्तरदाताओं ने कहा कि उनकी आय में कोई कमी नहीं आयी है। जबकि निम्न आय वर्ग एवं मध्यम आय वर्ग के 100 प्रतिशत उत्तरदाताओं ने कहा कि उनकी वास्तविक आय कम हुई है। मूल्य वृद्धि के कारण उतनी ही आय से वे कम वस्तुओं को खरीद सकते हैं।

6. मूल्य वृद्धि का कारण मांग व पूर्ति में संतुलन न होना, मुद्रा की मात्रा में वृद्धि होना, मुद्रा का मूल्य कम होना, उत्पादन में कमी होना, पानी की कमी या अधिकता, मंडियों में अनाज का संचयन आदि हैं।

अतः कहा जा सकता है कि मुद्रा रफ़ाति एवं मूल्य वृद्धि का प्रभाव सभी वर्ग के लोगों पर पड़ता है लेकिन गरीब वर्ग या निम्न आय वर्ग पर इसका प्रभाव सबसे अधिक पड़ता है। क्योंकि जिस तेजी से मूल्य में वृद्धि होती है उस तेजी से उनकी मजदूरी नहीं बढ़ती।

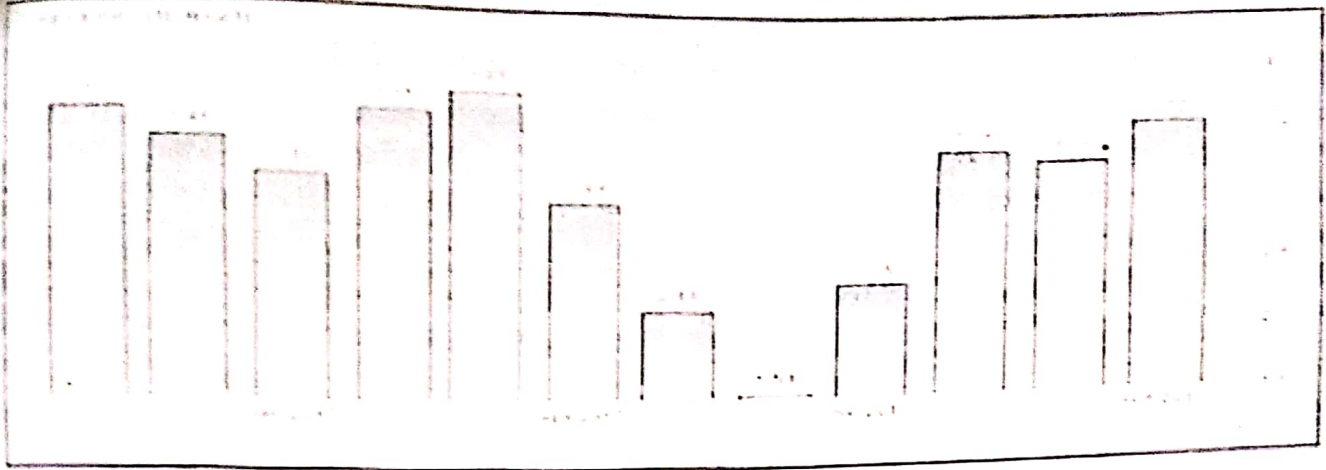
**सुझाव -**

1. खाद्य पदार्थों की उत्पादकता को मांग अनुकूल बढ़ाने से मूल्य वृद्धि पर अंकुश लगाया जा सकता है।
2. बढ़ती महंगाई के अनुसार मजदूर वर्ग की मजदूरी भी बढ़नी चाहिए जिससे उनकी आवश्यकताओं की पूर्ति सरलतापूर्वक हो सके।
3. मंडियों में अनाज को सड़ने से बचाने की सुविधाएँ विकसित किये जायें जिससे वस्तुओं की मात्रा एवं पूर्ति के बीच तत्तुलन बना रहे।
4. सीमित भूमि पर उन्नत कृषि कर भी अनाज की कमी को दूर किया जा सकता है।
5. सिंचाई सुविधाओं का विस्तार किया जाना चाहिए जिससे किसान वर्ग कृषि कार्य कर सके एवं खाद्य पदार्थों की आपूर्ति हो सके।
6. किसानों के लिए बाजार तक उत्पादित वस्तुओं को पहुंचाने की सुविधा होनी चाहिए जिससे दूरे मूल्य का लाभ उनको ही मिल सके। जिसे विचोलिए प्राप्त करते हैं।

**संभावनाएं -** आने वाले समय में सव्जियों के मूल्यों में कमी आने की संभावना है कारण - मौसमी सव्जियों की फसल खेतों से आने लगेगी। किन्तु रसोई गैस, पेट्रोल, एवं अन्य वस्तुओं की कीमतों कमी आने की संभावना दिखाई नहीं देती।

**संदर्भ ग्रंथ सूची :-**

1. मिश्रा, सी० एस० एण्ड भारद्वाज, अर्थशास्त्र द्वितीय वर्ष पेज नं० 55.
2. <https://tradingeconomics.com/india/inflation-cpi>
3. [apubskqyolkip.gq/2146-essay-on-mahangai-6848.html](http://apubskqyolkip.gq/2146-essay-on-mahangai-6848.html).
4. भारद्वाज, जीवनलाल (2017, नवम्बर 21) - 'आखिर देश में महंगाई डायन फिर क्यों चली आयी?' नवभारत, पेज नं० 041
5. अंधिकावाणी, (2017, नवम्बर 22) - 'प्याज के आरसू', पेज नं० 41
6. Kumar Rajiv, Pankaj Vashisht and Gunajit Kalita (2010, March 6): "Food Inflation - Contingent and Structural Factors", Economic and Political Weekly, Vol. 45, No. 10, pp. 16-19.
7. Mohanty, Deepak (2010, March 4): "Inflation Dynamics in India: Issues and Concerns", speech delivered at Bombay Chamber of Commerce & Industry, published in Monthly Bulletin, April, 2010, RBI, Bombay, pp. 763-769.
8. Chand, Ramesh (2010, February 27): "Understanding the Nature and Causes of Food Inflation", Economic and Political Weekly, Vol. 45, No. 9, pp. 10-13.
9. Tuteja, Usha (2008, December): "Protect Poor from Food Inflation", Economic Times.
10. Smith, Melanie - sampal paper The Relationship between Inflation and Economic Growth (GDP) an Ampirical Analysis. <http://www.ivoryresearch.com/writers/melanie-smith>.
11. मिश्रा, सी० एस० एण्ड भारद्वाज, अर्थशास्त्र द्वितीय वर्ष पेज नं० 57.
12. शर्मा, वरिन्ध प्रकाश, (2007) रिस्चर्च में थडोलॉजी, पंचशील प्रकाशन, जयपुर, पेज नं० 59।
13. उप्रेती, हरिश्चन्द्र - (2000) भारतीय जनजातियाँ - संरचना एवं विकास, राजस्थान हिंदी ग्रंथ अकादमी, जयपुर, पेज नं० 377, 378



Source - <https://tradingeconomics.com/india/inflation-cpi>

तालिका क्रमांक 1  
 वर्तमान में आय में वृद्धि की स्थिति-

क्र.	आय में वृद्धि का स्वरूप	हां हुई है	नहीं हुई	कह नहीं सकते	योग
1	उच्च आय वर्ग	20	0	0	20
2	मध्यम आय वर्ग	20	0	0	20
3	निम्न आय वर्ग	20	0	0	20
4	योग	60	0	0	60
5	प्रतिशत	100	0	0	100

स्रोत - प्राथमिक स्रोत।

तालिका क्रमांक 2  
 खाद्य पदार्थों एवं सब्जियों के मूल्य में वृद्धि की स्थिति-

क्र.	खाद्य पदार्थों एवं सब्जियों के मूल्य में वृद्धि	हां हुई है	नहीं हुई	कह नहीं सकते	योग
1	उच्च आय वर्ग	20	0	0	20
2	मध्यम आय वर्ग	20	0	0	20
3	निम्न आय वर्ग	20	0	0	20
4	योग	60	0	0	60
5	प्रतिशत	100	0	0	100

स्रोत - प्राथमिक स्रोत।

तालिका क्रमांक 3  
 मूल्य वृद्धि से वस्तुओं के उपभोग प्रवृत्ति की स्थिति

क्र.	मूल्य वृद्धि से वस्तुओं के उपभोग प्रवृत्ति का प्रभाव	कम हुई है	अधिक हुई	कोई प्रभाव नहीं पडा	योग
1	उच्च आय वर्ग	0	0	20	20
2	मध्यम आय वर्ग	12	0	8	20
3	निम्न आय वर्ग	20	0	0	20
4	योग	32	0	28	60

स्रोत - प्राथमिक स्रोत।

**तालिका क्रमांक 4**  
**मूल्य वृद्धि का उपभोक्ता की वास्तविक आय पर प्रभाव**

क्र.	मूल्य वृद्धि का उपभोक्ता वर्ग पर प्रभाव	वास्तविक आय कम हुई	वास्तविक आय अधिक हुई	कोई प्रभाव नहीं पड़ा	योग
1	उच्च आय वर्ग	16	0	04	20
2	मध्यम आय वर्ग	20	0	0	20
3	निम्न आय वर्ग	20	0	0	20
4	योग	56	0	04	60

स्रोत - प्राथमिक स्रोत।

**तालिका क्रमांक 5**  
**मूल्य वृद्धि का उपभोक्ता की बचत पर प्रभाव**

क्र.	मूल्य वृद्धि का उपभोक्ता की बचत पर प्रभाव	बचत कम हुई	बचत नहीं हुई	कोई प्रभाव नहीं पड़ा	योग
1	उच्च आय वर्ग	18	0	02	20
2	मध्यम आय वर्ग	20	0	0	20
3	निम्न आय वर्ग	00	20	00	20
4	योग	38	20	02	60

स्रोत - प्राथमिक स्रोत।

**तालिका क्रमांक 6**  
**मुद्रा की मात्रा में वृद्धि होना**

क्र.	मुद्रा की मात्रा में वृद्धि हुई है	हां	नहीं	कह नहीं सकते	योग
1	उच्च आय वर्ग	20	0	0	20
2	मध्यम आय वर्ग	20	0	0	20
3	निम्न आय वर्ग	20	0	0	20
4	योग	60	0	0	60
	प्रतिशत	100	0	0	100

स्रोत - प्राथमिक स्रोत।

**तालिका क्रमांक 7**  
**मुद्रा का मूल्य कम होना**

क्र.	मुद्रा का मूल्य कम हुआ है	हां	नहीं	कह नहीं सकते	योग
1	उच्च आय वर्ग	20	0	0	20
2	मध्यम आय वर्ग	20	0	0	20
3	निम्न आय वर्ग	20	0	0	20
4	योग	60	0	0	60
	प्रतिशत	100	0	0	100

स्रोत - प्राथमिक स्रोत।

\*\*\*\*\*

74

जनवरी-जून, 2018

# मध्य भारती

मानविकी एवं समाजविज्ञान की द्विभाषी शोध-पत्रिका

भास्कराचार्य रचित गणितीय कृति लीलावती : एक अवलोकन रामप्रसाद	5
✓ आधुनिकता के परिप्रेक्ष्य में छायावाद कामिनी	23
बौद्ध धर्म-दर्शन और मार्क्सवाद के साथ दलित साहित्य का अंतर्सम्बन्ध दीपक सिंह	32
भारतीय ज्ञान परम्परा में कामशास्त्र का इतिहास राघवेन्द्र मिश्र	38
धर्म और विज्ञान का अंतर्विरोध अनिल कुमार तिवारी	59
कमलेश्वर के 'काली आंघी' उपन्यास में स्त्री-विमर्श संजीव कुमार विश्वकर्मा	68
शान्तीय संगीत में लोक संगीत के तत्त्व वृजेश मिश्रा	73
गाँधी के राष्ट्रवाद की अवधारणा पंकज सिंह	83
भरहुत की कला में प्रतिबिम्बित लोक जीवन कृष्ण देव पाण्डेय	94
समकालीन समाज-दर्शन और स्वामी विवेकानन्द शैल कुमारी	103
मध्यप्रदेश की संस्कृति में छतरपुर अंचल की भूमिका विशाल विक्रम सिंह	118
एशियाई परिदृश्य और भारत-चीन संबंध नेहा निरंजन	128
'उस जनपद का कवि हूँ' : कविता के सरोकार दुर्गेश वाजपेयी	135
महिला सशक्तीकरण में महिला पुलिस की भूमिका के प्रति महिलाओं का दृष्टिकोण (सागर नगर के परिप्रेक्ष्य में एक अध्ययन) विवेक मेहता	146

# आधुनिकता के परिप्रेक्ष्य में छायावाद

कामिनी

आधुनिकता शब्द अंग्रेजी के मॉडर्ननिटी (Modernity) का पर्याय है। यूरोप में सोलहवीं शताब्दी से उन्नीसवीं शताब्दी तक 'आधुनिक' शब्द का प्रयोग 'वर्तमान' के पर्याय के रूप में किया जाता रहा था। पुनर्जागरण के पश्चात आधुनिक शब्द से कई विशेषण जुड़ते चले गए और उसका अर्थ विस्तार होता गया। उन्नीसवीं शताब्दी के अंत तक आते-आते आधुनिकता का प्रयोग 'सुधार', 'प्रगतिशीलता' व 'तार्किकता' के अर्थ में होने लगा। भारत में भी आधुनिकता का संबंध नवजागरण से ही जुड़ा है। भारत में अंग्रेजों का वर्चस्व बढ़ने के साथ ही सामाजिक व आर्थिक ढाँचे में गंभीर उथल-पुथल देखने को मिलती है जिसके फलस्वरूप एक नया सामाजिक वर्ग आकार लेता है। अंग्रेजों ने अपनी वर्चस्व स्थापना के क्रम में भारत में जो भी कार्यक्रम लागू किए उनका परिणाम एकांगी न रह सका बल्कि यह बहुआयामी सिद्ध हुआ, मसलन पश्चिमी शिक्षा, प्रेस का विस्तार, रेल आदि के प्रसार ने भारतीयों के लिए दुनिया भर के ज्ञान-विज्ञान का रास्ता खोल दिया। भारतीयों ने तर्क और विज्ञान की नई रोशनी में अंग्रेजी शासन के साथ भारतीय समाज की आंतरिक बुराइयों को भी देखना शुरू किया। 1857 के महान स्वतंत्रता संग्राम ने भारत में नवजागरण की प्रक्रिया को काफी तेज कर दिया जिसका परिणाम हमें बड़े पैमाने पर शुरू हुए सुधार कार्यक्रमों के रूप में दिखाई पड़ता है। आज हम यह बात प्रामाणिक रूप से कह सकते हैं कि भारतीय नवजागरण अपने अतीत के प्रति अत्याधिक मोह-ग्रस्त होने के कारण सदैव द्वंद्व ग्रस्त रहा जिसका असर हमारे साहित्य पर भी दिखाई पड़ता है। हमारी आधुनिकता ने भी इसी द्वंद्व के बीच आकार लिया है जिसके अच्छे और बुरे दोनों परिणाम हमारे सामने हैं। यहाँ 'बुरे' से इशारा आधुनिकता की कोख से जन्मी सांप्रदायिकता की तरफ है। भारत में आधुनिकता के आगमन की यह अवधारणा पूरी तरह निर्विवाद नहीं है। इसको चुनौती देते हुए अक्सर यह सवाल उठाया जाता है कि यदि अंग्रेज भारत न आए होते तो क्या भारत में आधुनिकता न आती? इस सवाल के जबाब में यही कहा जा सकता है कि आधुनिकता एक प्रक्रिया है किसी भी समाज में जब आत्मसजगता, तर्क, विज्ञान, के साथ कर्ता भाव जागृत होने लगता है तो वह आधुनिकता की तरफ अग्रसर होता है। निसंदेह भारत में अंग्रेजों के जमने के पहले ही उपरोक्त स्थितियाँ बनने लगी थी सोलहवीं शताब्दी में पुर्तगालियों के साथ प्रेस का आगमन हो चुका था। साहित्यिक तथ्यों की खोज करें तो रीतिकाल में हमें आधुनिकता के लक्षण मिलने लगते हैं तो एक बात तो तय है कि अंग्रेज न आए होते तब भी आधुनिकता तो आती ही लेकिन उसका स्वरूप कैसा होता? यह प्रश्न आज निरर्थक है।

मध्य भारती-74, जनवरी-जून, 2018, ISSN 0974-0066, pp. 23-31



भारतीय नवजागरण अपने कलेवर में युरोपीय नवजागरण से सर्वथा अलग है विभिन्न प्रदेशों में इसका स्वरूप अलग-अलग रूपों में दिखाई पड़ता है और यही हाल नवजागरण के साथ आ रही आधुनिकता का भी है। यह बंगाल में एक ढंग का, महाराष्ट्र में दूसरे ढंग का तथा हिन्दी क्षेत्र में इन दोनों से अलग ढंग का दिखाई पड़ता है। लेकिन नवजागरण के इन विभिन्न रूपों में एक समानता भी थी, वह यह कि भारतीय जनता को जागृत करने में सभी सहायक सिद्ध हुए थे और इसके फलस्वरूप उन्नीसवीं सदी में भारतीय समाज आधुनिकता की ओर उन्मुख हुआ था। रामधारी सिंह दिनकर के शब्दों में - "भारत में आधुनिकता का प्रवेश उन्नीसवीं सदी में हुआ और उसके व्याख्याता राजा राममोहन राय, केशवचंद्र सेन, स्वामी विवेकानंद, स्वामी दयानन्द, लोकमान्य तिलक, रवीन्द्रनाथ ठाकुर आदि भारतीय थे।"

राजनीतिक तथा सामाजिक क्षेत्रों में जो भी बदलाव हो रहे थे उसका असर साहित्य पर पड़ना भी स्वाभाविक ही था। आधुनिकीकरण के चरण के रूप में पत्रकारिता का विकास, साहित्य की अनेक विधाओं का प्रवर्तन, भाषा की दृष्टि से खड़ी बोली की प्रतिष्ठा आदि तत्त्व हिन्दी साहित्य में भारतेन्दु युग से शुरू होकर द्विवेदी युग और छायावाद के साहित्य में प्रकट हुए। वस्तुतः आधुनिकता की प्रक्रिया क्रमिक रूप में निरंतर गतिशील प्रक्रिया है, इसलिए आधुनिकता की शुरुआत के लिए कहीं रेखा खींच कर इसे स्पष्ट नहीं किया जा सकता। जैसा कि केदारनाथ सिंह कहते हैं - "वस्तुस्थिति यह है कि हिन्दी कविता में (और कमोवेश पूरी भारतीय कविता में भी) आधुनिकता कोई आकस्मिक घटना नहीं है बल्कि यह एक लंबी विकास प्रक्रिया का परिणाम है। मुक्ति आंदोलन के समानान्तर और कई बार उसके आगे-पीछे यह प्रक्रिया पुराने मूल्यों से टकराती हुई और उन्हें छिन्न-भिन्न करते हुए अपने ढंग से चुपचाप चलती रही है।"

आधुनिकता-बोध के निर्माण की प्रक्रिया तीन स्तरों पर घटित होती है - विचार के स्तर पर, भाषा के स्तर पर और विधाओं के स्तर पर विचार के स्तर पर, देखें तो रीतिकालीन नखशिख परंपरा, नायक-नायिका भेद आदि को छोड़कर भारतेन्दु युगीन काव्य से ही हिन्दी जाति के जीवन के दुख-दर्द, ओज कर्मण्यता, जातीय गौरव, प्रेम सौहार्द और यथार्थ की अभिव्यक्ति का माध्यम कविता बनती है। रीतिकाल में जो सामाजिक जीवन उपेक्षित हो गया था, वह भारतेन्दु युग से पुनः प्रतिष्ठित होता है। भारतेन्दु युग में नारी शिक्षा, विधवाओं की दुर्दशा और अस्पृश्यता को लेकर अनेक सहानुभूतिमूलक कवितायें लिखीं गईं। "बहुत हमने फैलाये धर्म, बढ़ाया छुआछूत का कर्म" कहकर भारतेन्दु ने वर्णाश्रम का विरोध किया तो प्रताप नारायण मिश्र ने बात विधवाओं की दीन दशा को इन शब्दों में प्रकट किया 'कौन करेजो नहिं कसकत, सुनि विपति बात विधवन की'।

विचारों में परिवर्तन के साथ-साथ भाषा में भी परिवर्तन होना स्वाभाविक था क्योंकि विचारों को उसकी सहज भाषा से पृथक नहीं किया जा सकता घ पुराने संस्कारों को तोड़ने के लिए कवि ब्रजभाषा छोड़कर खड़ी बोली अपनाता है। डॉ. रामस्वरूप चतुर्वेदी के शब्दों में - "भारतेन्दु से काव्यभाषा का आधार बदलता है। ब्रजभाषा से खड़ीबोली जहाँ क्रमशः द्विवेदी युग के प्रचलित अप्रस्तुत विधान के बीच से बिम्ब की नई पहचान उभरती है। जिस बिन्दु पर समस्त भावबोध एकबारगी जटिलतर होता है और संश्लिष्टता की ओर झुकाव बढ़ता है।"

गद्य की जितनी भी विधाएँ समकालीन साहित्य में प्रचलित हैं, उसमें से लगभग सारी विधाओं का प्रवर्तन भारतेन्दु युग में ही होता है। सामान्य जनता तक अपनी बात को पहुँचाने के लिए इस युग के रचनाकर्त्तों ने गद्य की सभी विधाओं का प्रयोग किया, जैसे नाटक, उपन्यास, कहानी आत्मकथा आदि।

भारतेन्दु युग से शुरू हुई सभी साहित्यिक प्रवृत्तियाँ अपने घनत्व तथा विस्तार के साथ द्विवेदी युग में आगे बढ़ती हैं। छायावाद तक आते-आते भाषा, विचार आदि में एक प्रौढ़ता दिखाई पड़ने लगती है। छायावाद बीसवीं सदी के प्रथम दो दशकों में भारत में हुए नवजागरण का काव्यात्मक रूपांतर है। विकासमान और संघर्षशील पूंजीवाद तथा पाश्चात्य संस्कृति, शिक्षा और साहित्य के निकट संपर्क या प्रभाव से भारत में वैयक्तिक अनुभूतियों, व्यक्तिवादी प्रवृत्तियों की सीधी अभिव्यक्ति दिखाई पड़ने लगती है। पूंजीवाद के उदय और आधुनिक विकास के प्रारम्भ में व्यक्ति की बदली हुई सामाजिक स्थितियाँ कविता को रोमांटिकता की ओर ले जाती हैं। स्वचेतना, वस्तुगत प्रकृति के प्रति जिज्ञासा का भाव, सौंदर्य-प्रेम, परिवेश के प्रति असंतोष आदि रोमांटिकता के सारे तत्व छायावादी कविता में मिलते हैं। इस रोमानियत की वजह से हमें छायावादी कविता में जहाँ एक ओर स्वप्न और आत्मरति दिखाई पड़ती है वहीं दूसरी ओर विद्रोह और मुक्ति की अकुलाहट भी कविता का मुख्य स्वर बनती है। सांस्कृतिक पुनर्जागरण तथा राष्ट्रीय आंदोलन के उत्थान में मध्यवर्गीय रोमांटिकता का प्रमुख योगदान रहा है कविता के क्षेत्र में छायावाद के रूप में इन सबका ऐतिहासिक और तर्कसंगत प्रतिफलन हुआ है।

छायावादी काव्य तत्कालीन समाज में पैदा हो रहे आधुनिक भाव-बोध तथा उसके विरोधाभासों को अभिव्यक्त करता है। वह भारत की औपनिवेशिक पराधीनता तथा समाज में व्याप्त सामंती मूल्यों से मुक्ति का साहित्य है जिसमें जागरण तथा विद्रोह के भावों के साथ जातीय एकता व नवीन सांस्कृतिक मूल्यों को प्रतिष्ठित करने की आकांक्षा दिखाई पड़ती है। छायावाद में मिलने वाली व्यक्ति स्वतंत्रता की भावना का रूप आपने-आप में अनूठा है यह प्रयोगवाद या नई कविता के व्यक्तिवाद जैसा नहीं है। छायावाद में व्यक्ति स्वातंत्र्य की चाहत तत्कालीन समाज की पराधीनता से मुक्ति की लड़ाई से जुड़ी हुई है। निराला कहते हैं -

‘मैंने मैं शैली अपनाई

देखा दुखी एक निज भाई

दुख की छाया पड़ी हृदय में मेरे

झट उमड़ वेदना आई।’<sup>5</sup>

यहाँ एक बात साफ तौर पर रेखांकित की जा सकती है कि छायावादी ‘मैं’ सामाजिक मुक्ति व उसके दुख-दर्द को व्यक्त करने वाला सर्वनाम है। डॉ. बच्चन सिंह के अनुसार - “मुक्ति के प्रति आग्रह का तात्पर्य इस लौकिक सत्ता से परे किसी चरम सत्ता में विलयन से नहीं था बल्कि रूढ़ियों, अंधविश्वासों, गलित मूल्यों से मुक्त होना था।..... अपने आप को विलीन करने की प्रक्रिया ही स्वतन्त्रता तक ले जाती है। बंधन चेतना के मद्धिम पड़ने, बोध के संकीर्ण होने और चीजों के गलत मूल्यांकन का दूसरा नाम है। मुक्ति एक स्तर पर वैयक्तिक है, तो दूसरे स्तर पर सामूहिक, साहित्य में वैयक्तिकता के फलस्वरूप ही काव्यरूढ़ियों से मुक्त होने की बात कही गई है।”<sup>6</sup>

छायावादी काव्य में नारी को सौंदर्य-प्रतिमा के साथ सामाजिक जीवन की एक महत्वपूर्ण इकाई के रूप में स्वीकार किया गया है। यहाँ नारी दया की पात्र न होकर प्रेरक है। इस तरह देखें तो यह एक बदली हुई नारी चेतना है जो परिवर्तित होते हुए समाज के साथ प्रकट हो रही है। द्विवेदी युगीन नारी का त्याग छायावाद तक आते-आते अधिकार की मांग करने लगता है वह आदर्श की खोखली जमीन से यथार्थ की सतह पर उतरने को बेचैन दिखाई पड़ता है। छायावाद ही वह काव्य आंदोलन है जिसमें एक नारी इतना साहस अर्जित कर पाती है कि वह अपने पूर्व-प्रेमी से कह सके।

‘हम दोनों भिन्न वर्ण  
भिन्न जाति, भिन्न रूप  
भिन्न धर्मभाव पर  
केवल अपनाव से प्राणों से एक थे ।’<sup>7</sup>

शिक्षा के नए वातावरण में स्त्री और पुरुष के साहचर्य से प्रेम का एक नया स्वरूप सामने आया जिसमें अपने प्रेम को व्यक्त करने के लिए किसी माध्यम का सहारा नहीं लिया गया, अपितु स्पष्ट शब्दों में स्वीकार किया गया कि ‘बालिका मेरी मनोरम मित्र थी’<sup>8</sup> वही महादेवी वर्मा के काव्य में सामंती बंधनों से नारी के स्वातंत्र्य भाव और मुक्ति की छटपटाहट सर्वत्र दिखलाई पड़ती है —

‘भैं नीर भरी दुख की बदली  
स्पंदन में चीर निस्पंद बसा  
क्रंदन में आहत विश्व हँसा  
नयनों मे दीपक से जलते  
पलकों में निर्झरिणी मचली’<sup>9</sup>

नवजागरण काल में नारी के प्रति एक नई दृष्टि विकसित हुई थी। विभिन्न सामाजिक परम्पराओं के मूल्यांकन के साथ ही नारी की सामाजिक स्थिति का भी मूल्यांकन किया गया। छायावाद की नारी दृष्टि भी इस मूल्यांकन का परिणाम है। नारी के प्रति इस बदली दृष्टि का परिणाम बदले स्त्री-पुरुष सम्बन्धों के रूप में भी दिखाई पड़ता है। स्त्री केवल पत्नी के रूप में ही नहीं प्रिय, प्रेयसी, सखी या सजनी के रूप में भी पहचान प्राप्त करती है। इसी क्रम में छायावादियों की उस भावदृष्टि का विकास भी देखा जा सकता है जिसे हम सामंत विरोधी कह सकते हैं। सम्राट अष्टम एडवर्ड जब अपनी प्रेमिका के लिए सम्राट पद त्याग देते हैं तो निराला कहते हैं-

‘मानव-मानव से नहीं भिन्न  
निश्चय हो श्वेत कृष्ण अथवा  
वह नहीं क्लिन्न  
भेद कर पंक  
निकलता कमल जो मानव का  
वह निष्कलंक हो कोई सर ।’<sup>10</sup>

इसी तरह छायावादी प्रेमानुभूति भी एक नए रूप में है। रीतिकाल की तरह शरीर यहाँ लक्ष्य नहीं है भक्तिकाल की तरह तिरस्कृत भी नहीं है, बल्कि यह वह भूमि है जहाँ स्त्री-पुरुष अपने रागात्मक संबंध की जैविकी का सानंद उपभोग करते हैं। छायावादी प्रेमानुभूति न केवल शरीर व मन दोनों की प्रतिक्रियाओं को समान स्थान देती है बल्कि इसका हर पक्ष कहीं न कहीं अपने युग में नया रूपकार लेते मानवीय सम्बन्धों के यथार्थ से जुड़ा है। श्रद्धा और मनु का मिलन जिसने मन से लेकर शरीर तक की लंबी यात्रा तय की यह मिलन मध्ययुगीन स्त्री-पुरुष सम्बन्धों से सर्वथा विपरीत बिन्दु प्रस्तुत करता है। डॉ. शम्भूनाथ के शब्दों में - ‘प्रेम मनुष्य को व्यक्तिवाद से मुक्त कर देता है, उसका पुनर्निर्माण करता है, उसे व्यापक सौंदर्यबोध की ओर ले जाता है, छायावाद का प्रेम ऐसा ही था ।’<sup>11</sup>

महादेवी की प्रेमानुभूति छायावादी प्रेम के दूसरे कोण को सम्पन्न करती है। यह कोण है स्त्री की दृष्टि से देखे-समझे और भोगे संसार का, स्त्री के अनुभव का। इसके माध्यम से उस युग की स्त्री मानसिकता में

घटित हो रहे परिवर्तनों को समझा जा सकता है, जिसके एक ओर लज्जालु किशोर भावना है, किन्तु इसके बाद के सारे प्रेमानुभाव में एक ही पक्ष बार-बार उभरता है और वह है नवजागृत नारी विश्वास का, जिसके चलते वह अपने को पुरुष के अस्तित्व में लय नहीं करना चाहती -

‘सजनि मधुर निजत्व दे  
कैसे मिलूँ अभिमानिनी मैं।’<sup>12</sup>

छायावाद का समय इतिहास के पुनरान्वेषण का भी समय था। वैसे हर पराधीन देश में राष्ट्रीयता का उदय पुनुरुत्थान भावना के साथ होता है। अंग्रेज रोमांटिक कवियों ने भी विगत सांस्कृतिक वैभव को प्रलुब्ध दृष्टि से देखा था और औद्योगिक सभ्यता के निर्मम प्रसार में मानवीय सम्बन्धों को आदिम रागात्मकता की ओर लौटने का संदेश दिया था। एक बात यहाँ साफ करना जरूरी है कि अंग्रेज कवि गुलाम नहीं थे उनके सामने औद्योगिक सभ्यता का विराट भ्रमजाल था जबकि भारत में स्थितियाँ एक-दम उलट थीं यहाँ हम विगत सांस्कृतिक वैभव में आदिम रागात्मकता के साथ-साथ पौरुष भी दूँढ रहे थे और इस क्रम में ऐतिहासिक विसंगति का शिकार भी हो रहे थे। छायावादी साहित्य एक पराधीन देश की काव्यात्मक अभिव्यक्ति है। भारत के अतीत की काफी गौरवशाली छवियाँ हैं, सभ्यता संस्कृति का सुंदर इतिहास है ऐसे में जब देश साम्राज्यवाद और नव पूंजीवाद के लौहतन्त्र में जकड़ता जा रहा था तब वर्तमान के पराभव में शक्ति अर्जित करने के लिए अतीत की ओर लौटना छायावादी संस्कार बन गया। अतीत के प्रति अत्याधिक मोहग्रस्तता के काफी दुष्परिणाम भी हमें झेलने पड़े क्योंकि वर्तमान दुश्मन से लड़ने के लिए हमने जिन प्रतीकों का चयन किया वे बहुत ही अतार्किक थे। यहाँ पर एक बड़ा सवाल हमारे सामने खड़ा होता है कि जिस 1857 ने भारतीय नवजागरण के पनपने में इतनी बड़ी भूमिका निभाई उसकी शानदार परंपरा हमारी राजनीति और साहित्य का हिस्सा क्यों नहीं बन सकी?

छायावादी कविता में भी हम इस कमी को महसूस कर सकते हैं। छायावादी कविता अपने समय की राजनीति से गहरे तक प्रभावित है यह अकारण नहीं है कि एक तरफ तिलक शिवाजी उत्सव और गणेश पूजा का आरंभ करते हैं तो दूसरी तरफ निराला ‘शिवाजी का पत्र’, प्रसाद ‘महाराणा का महत्व’, ‘पेशोला की प्रतिध्वनि’ जैसी कविता लिखते हैं। ध्यान से देखा जाय तो यह सारे प्रतीक हिन्दू प्रतीक हैं जो सांझी लड़ाई में बहुत फायदेमंद नहीं साबित हुए। बहरहाल यह छववाद का एक अनुद्धत पक्ष है जो कहीं से भी उसका मुख्य प्रतिपाद्य नहीं है अतः इसे छायावादी चेतना के मूल्यांकन का आधार नहीं बनाया जा सकता। छायावादी कविता के मूल्यांकन का आधार तो उसकी मुक्तिकामी चेतना ही हो सकती है जो की उक्त प्रतीकों का भी प्रतिपाद्य है। ‘पेशोला की प्रतिध्वनि’ में प्रसाद कहते हैं -

‘आह! इस खेवा की!  
कौन धामता है पतवार ऐसे अंधड़ में  
अंधकार पारावार गहन नियति सा  
उमड़ रहा है, ज्योति रेखा हीं क्षुब्ध हो।’<sup>13</sup>

अंग्रेजी साम्राज्यवाद की नीति केवल भारत के आर्थिक शोषण तक सीमित नहीं थी बल्कि उसका उद्देश्य भारतीय जनता के जातीय और सांस्कृतिक भावों को नष्ट कर उसे आत्महीनता की दशा में धकेल देना भी था। इसीलिए तत्कालीन भारत में राजनीतिक स्वतन्त्रता प्राप्त करने के लिए जनता को सांस्कृतिक बोध कराना आवश्यक था। आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी ने इस तथ्य को उद्घाटित करते हुए लिखा है - ‘छायावाद एक विशाल सांस्कृतिक चेतना का काव्य था, जिसमें कवियों की भीतरी आकुलता ने ही नवीन भाषा-शैली में

अपने को अभिव्यक्त किया। सभी उल्लेखनीय कवियों में थोड़ी-बहुत आध्यात्मिक अभिव्यक्ति की आकुलता थी। जिन कवियों ने शास्त्रीय और सामाजिक रुढ़ियों के प्रति विद्रोह का भाव दिखाया था, उनके इस भाव का कारण तीव्र सांस्कृतिक चेतना ही थी।" उदाहरण के लिए हम निराला को ले सकते हैं। निराला भारतीय सांस्कृतिक मूल्यों के विघटन और राजनीतिक पराभव का कारण ही नहीं उपस्थित करते बल्कि संघर्ष के भावों द्वारा पुनर्जागरण की प्रेरणा भी देते हैं। निराला की "जागो फिर एक बार" कविता को छायावादी सांस्कृतिक चेतना के प्रतीक के रूप में देखा जा सकता है।

सन् 1920 से लेकर छायावाद के उत्कर्ष काल सन 1936 तक भारतीय राजनीति में गांधी जी का उत्कर्ष काल माना जा सकता है इसलिए कई विद्वान छायावाद को गांधीवादी विचारों का राजनीतिक प्रतिफलन मानते हैं जैसा की डॉ. नगेद्र ने लिखा है - "यह ठीक है कि छायावाद का जन्म दक्षिण और वामपंथ के इस संघर्ष यहाँ तक की गांधीवाद के जन्म से ही पहले हो चुका था, परंतु फिर भी इसमें संदेह नहीं कि उसका मूल आधार आदर्शवादी चिन्ताधारा ही है जो गांधीवाद अथवा समस्त दक्षिणपक्षीय विचारधारा का ही मूल आधार है।" लेकिन गहराई से देखें तो हम पाते हैं कि सामाजिक परिवर्तन और राष्ट्रीय मुक्ति के लिए संघर्ष का रास्ता अपनाने की पद्धति में छायावाद गांधीवाद से एकदम अलग रास्ता चुनता है। गांधीवादी विचारधारा राजनीतिक स्वाधीनता प्राप्ति के लिए किसान और जमींदार, उच्च और निम्न वर्ग, पूंजीपति और मजदूर को एक ही रास्ते पर चलकर सत्य और अहिंसा की विचारधारा के माध्यम से वर्ग समन्वय और हृदय परिवर्तन जैसे सिद्धांतों का पाठ पढ़ाती है। छायावादी कवि इन सिद्धांतों की हकीकत समझते हैं वे इन वर्गों के आपसी अंतर्विरोध को उद्घाटन करते हुए उपेक्षित निम्न वर्ग, किसान और मजदूर की स्वाधीनता को ही असली स्वाधीनता मानते हैं। कहने का तात्पर्य है कि समाजवादी यथार्थवादी चेतना भी छायावाद का एक हिस्सा है हाँ एक बात जरूर है कि वह उसके घोषणा-पत्र में शामिल नहीं की गई है। यहाँ बात को स्पष्ट करने के लिए निराला की कविता 'बादल राग-6' का उदाहरण सबसे बेहतर रहेगा। निराला की यह कविता 1924 में प्रकाशित होती है। इस कविता की खास बात यह है कि सीधे-सीधे पूंजीवाद साम्राज्यवाद सामंतवाद के खिलाफ क्रांति की वकालत करती है और इस बात को भी स्थापित करती है कि क्रांति से 'छोटे ही शोभा पाते हैं' निराला को व्यवस्था में आमूल-चूल परिवर्तन का पूरा भरोसा है जैसे ही जैसे क्रांतिकारियों को होता है -

अशनि-पात से शायित उन्नत शत-शत वीर,  
क्षत-विक्षत हत अचल शरीर,  
गगन-स्पर्शी स्पर्धा-धीर।  
हँसते है छोटे पौधे लघुभार-  
शस्य अपार,  
हिल-हिल  
खिल-खिल,  
हाथ मिलाते,  
तुझे बुलाते,  
विप्लव-रव से छोटे ही शोभा पाते।  
रुद्ध कोप है, क्षुब्ध तोष,  
अंगना-अंग से लिपटे भी,  
आतंक-अंक पर काँप रहे हैं

धनी, वज्र-गर्जन से बादल!  
त्रस्त नयन-मुख ढाँप रहे हैं।  
जीर्ण बाहु, है शीर्ण शरीर  
तुझे बुलाता कृपक अधीर,  
ऐ विप्लव के वीर!"

भारत में आधुनिकता के आगमन की प्रक्रिया काफी जटिल और भिन्न है उसमें ढेर सारी सकारात्मकता है तो कुछ नकारात्मकता भी है और छायावादी साहित्य दोनों अर्थों में इस प्रक्रिया का प्रतिनिधित्व करता दिखाई पड़ता है। इस लेख के अंतिम बिन्दु के रूप में हम छायावादी रहस्यवाद और आधुनिकता से उसके संबंध की पड़ताल करेंगे। डॉ. नामवर सिंह के अनुसार - "रहस्य भावना प्राचीन है, लेकिन रहस्यवाद आधुनिक है और हिन्दी में छायावादी काव्यान्दोलन से संबद्ध है।"

छायावाद का आधार या नव्यवेदांत अर्थात् वेदान्त दर्शन की नवीन युग के अनुरूप पुनर्व्याख्या। यह व्याख्या अद्वैत दर्शन पर आधारित थी, किन्तु यह अद्वैत दर्शन का प्राचीन वैयक्तिक साधनपरक तत्वों से हटा नवीन समाजिकता के घरातल पर अवतरण था। छायावाद ने अपने युग के यांत्रिक भौतिकवाद के विरुद्ध प्रतिक्रिया व्यक्त की। यांत्रिक भौतिकवाद प्रकृति और मनुष्य के बीच उपयोगितामूलक व्यवसायिक संबंध स्थापित करता था, छायावाद ने प्रकृति को एक चेतन व्यक्तित्व, विराट सत्ता के रूप में देखा। छायावादी रहस्यवाद के वस्तुगत स्रोतों को देखें तो पहला ही तत्व कवि में आत्मप्रसार तथा आत्मविस्तार की अदम्य आकांक्षा के रूप में दिखाई देता है। वास्तव में यह सभी प्रकार की देशकालगत बहिरंग व अंतरंग रूढ़ियों से मुक्ति की कामना के रूप में तथा कहीं रूप और नाम की सीमा में घिरे जगत से निर्बंध होने की लालसा के रूप में आता है। डॉ. नामवर सिंह इसका सामाजिक आधार स्पष्ट करते हुए लिखते हैं - 'यह जो अज्ञात और असीम की अभिलाषा है, यह वस्तुतः ज्ञात सीमाओं के असंतोष से उत्पन्न हुई है, और यह असंतोष तथा अभिलाषा केवल दिमागी ऐय्याशी नहीं है, बल्कि इसका सामाजिक आधार है, यह असंतोष और महत्वाकांक्षा उस मध्यवर्गीय व्यक्ति की है जो मध्ययुगीन पारिवारिक और सामाजिक रूढ़ियों को तोड़कर उन्मुक्त वातावरण में साँस लेने के लिए आकुल हो रहा था।'

मध्यकाल की रहस्यभावना में मुक्ति की कामना इहलोक के बंधनों से थी, परलोक के लिए, किन्तु छायावादी रहस्यभावना में कवि इहलोक के बंधन इहलोक के लिए ही तोड़ना चाहता है। उसकी मुक्ति का सारा प्रयोजन लौकिक और मानवीय है। इसी प्रेरणा के दर्शीभूत होकर पंचवटी प्रसंग में राम कहते हैं -

'छोटे से घर की लघुसीमा में  
बंधे हैं क्षुद्रभाव  
यह सच है प्रिये  
प्रेम का पयोधि तो उमड़ता है  
सदा ही निः सीम भू पर।'

निराला का वेदान्त दर्शन से जुड़ाव आरंभ से ही रहा, लेकिन यह वेदान्त गतिहीन, जड़, लोकनिरपेक्ष न होकर सामाजिक आधार पर प्रतिष्ठित है। कवि के भीतर एक द्वंद्व चलता है -जगत को माया समझने और उसका त्याग करने की सदियों से चली आ रही अवधारणा और जगत के शोषित, पीड़ित मनुष्य को लेकर, लेकिन इस द्वंद्व से निकलता हुआ कवि मानवमात्र का पक्ष लेता है और इसमें उसे अधिवास छूटने का भी कोई दुख नहीं है। प्रकृति के अनंत यौवन और सुषमा और मनुष्य जगत के दीन-हीन जीवन के बीच महादेवी प्रश्न करती हैं -

‘देखूँ खिलती कलियाँ या  
प्यासे मुखे अधरों को  
तेरी धिर यौवन मुग्धमा  
या जर्जर जीवन देखूँ।’”

यही प्रश्न कामायनी का मनु कुछ इस प्रकार करता है - ‘यन गुहा कृत्-मरुत्प्रचय ये हूँ मीर ये  
अपना विकास।’ 21 यह विकास मनु का अपना नहीं, मनुष्यमात्र का है। वह प्रगति आकांक्षी मनुष्य है जो  
रुकना नहीं चाहता, एक लालसा उसे निरंतर उद्देहित किए रहती है और यह लालसा अपने को छोड़ने, बंध  
और इसके भाष्यम से मनुष्य मात्र के संचान की लालसा है, लेकिन इसके साथ ही मनु आधुनिक, प्रगति  
पूँजीवादी युग की स्वार्थ, स्वार्थ और प्रगति की कल्पनाएँ भी उभारता है। कामायनी की मूल चिन्ता मनुष्य के  
केतना में पड़ी दार ज्ञान, इच्छा और क्रिया में असंगति को दूर करने की और उन्हें सामरस्य में करने की।  
मनु की प्रगति कामना उसे मनुष्य सभ्यता के विकास के विभिन्न चरणों यन्व-जीवन, कृषि-उद्योग में ले जाती है  
वह इनके निर्माण के लिए उत्तरदायी है, उसकी चेतना का विकास उसे श्रद्धा और बुद्धि के ढंग में मनुष्य  
समरसता की भूमि पर ले जाता है। वस्तुतः यह समरसता मानव-समाज की समरसता है, जहाँ किसी प्रकार  
भेदभाव नहीं है और यही प्रसाद के समरसता दर्शन का समाजशास्त्रीय परिप्रेक्ष्य है।

कमलः छायावाद ने अपने समय की बहुत सी रुढ़ियों को तोड़ा था, लेकिन रुढ़ियों मनुष्य निर्मित हैं  
हुए भी अपनी सफना और दीर्घमिता में मनुष्य के ही यश से बाहर हो जाती हैं। ये मनुष्य के इच्छाओं  
इच्छाओं, सुखाओं के रूप में पैदा होती हैं। छायावादी कवि अपनी अपरिसीम जीवनाकांक्षा और सौन्दर्य कल्प  
की सामाजिक विधि-नियमों के तले टक्कर फासिल बनते जाने की प्रक्रिया को सोंप नहीं सकता था ही  
सुखकर अधिष्ठाता की नहीं हो सकती थी, क्योंकि तत्कालीन समाज इसके अनुकूल नहीं था, अतः वह उच्च  
की शरण में जाता है और रहस्य के रूप में अपने विचारों को याणी देता है।

इस तरह से हम देखते हैं कि हिन्दी जगत में आधुनिकता की चेतना के विस्तार में छायावाद के  
भावपूर्ण भूमिका रही है। छायावाद ने परम्पराओं का मूल्यांकन करते हुए समाज के लिए नवीन नुस्खों के  
प्रतिष्ठा की थी। जिस वैज्ञानिक और तार्किक सोच के साथ छायावादी काव्य आकार लेता है वह निरिच्छा है  
आने आने वाले कवियों के लिए एक आधार का निर्माण भी करता है।

हिन्दी जगत

शासकीय नवीन कल्याण नगर  
बैकुंठपुर, जिला कोरिया, छत्तीसगढ़-492008

सन्दर्भ -

1. डॉ. लक्ष्मणजी शिंदे दिवंगतः आधुनिक सोच, पंजाबी पुस्तक भंडार, दिल्ली प्रथम संस्करण 1973 पृ. 44
2. डॉ. बाबुसाहेब शिंदे दिवंगतः तत्कालीन हिन्दी आलोचना, साहित्य अकादमी, दिल्ली प्रथम संस्करण 1998 पृ. 254
3. डॉ. लक्ष्मणजी शिंदे दिवंगतः भारत दुर्दशा, विद्याविद्यालय प्रकाशन 2002 पृ. 6
4. डॉ. लक्ष्मणजी शिंदे दिवंगतः आधुनिक कविता यात्रा, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद तृतीय संस्करण-2015 (द्वितीय)
5. डॉ. मन्द किशोर नवलः निराला रचनावली, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली चतुर्थ संस्करण-2006 (भाग-1) पृ. 1-46
6. डॉ. ब्रजानंद शिंदे दिवंगतः आधुनिक हिन्दी साहित्य का इतिहास, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद-1999 पृ. 140
7. डॉ. मन्द किशोर नवलः निराला रचनावली, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली चतुर्थ संस्करण-2006 (भाग-1) पृ. 508

8. सुमित्रानंदन पंत : पल्लव, राजकमल प्रकाशन-दिल्ली, नौवा संस्करण 1993 पृ. 56
9. महादेवी वर्मा : सांध्यगीत, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद-2002 पृ. 53
10. निराला रचनावली भाग-1 पृ. 339
11. डॉ. शम्भुनाथ : दूसरे नवजागरण की ओर, ज्ञानभारती दिल्ली-1993 पृ. 200
12. महादेवी वर्मा : सांध्यगीत, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद-2002 पृ. 66
13. जयशंकर प्रसाद : लहर, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद-2002 पृ. 67
14. आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी : हिन्दी साहित्य : उदभव और विकास, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, छठा संस्करण-1991 पृ. 243
15. डॉ. नगेन्द्र : आधुनिक हिन्दी कविता की मुख्य प्रवृत्तियाँ, पृ.11
16. स. नन्द किशोर नवल : निराला रचनावली, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली चतुर्थ संस्करण -2006 (भाग-1 ) पृ-135-136
17. डॉ. नामवर सिंह : आधुनिक साहित्य की प्रवृत्तियाँ, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद-2008 पृ. 38
18. वही पृ. 43
19. स. नन्द किशोर नवल : निराला रचनावली, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली चतुर्थ संस्करण -2006 (भाग-1 ) पृ- 51
20. स. निर्मला जैन : महादेवी साहित्य, समग्र प्रकाशन, नई दिल्ली 2000 पृ. 132
21. जयशंकर प्रसाद : कामायनी, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद 1989 (कर्म सगी) पृ. 103 यौद्ध धर्म



शोध पत्रिका  
2019  
मूल्य : 100 रुपए

ISSN : 0974-7958

# शोधश्री

संरक्षक :

डॉ. पी. के. कालड़ा  
निदेशक, दयालबाग एजुकेशनल इंस्टीट्यूट, आगरा

पगमर्श :

प्रो. जे. के. वर्मा, डीन, कला संकाय  
प्रो. शर्मिला सक्सेना, अध्यक्ष हिंदी विभाग

संपादक :

डॉ. प्रेमशंकर सिंह  
डॉ. वृजराज सिंह

संपादन सहयोग :

डॉ. रंजना पांडे  
अरविंद, पूजा यादव,  
प्रीति, गुर प्यारी यादव

संपादकीय संपर्क :

हिंदी विभाग, दयालबाग एजुकेशनल इंस्टीट्यूट, आगरा  
ई-मेल : shodhshreedei@gmail.com  
मोबाइल : 9838709090, 9415703379

दयालबाग एजुकेशनल इंस्टीट्यूट, आगरा

---

प्रकाशक, मुद्रक दयालबाग एजुकेशनल इंस्टीट्यूट, दयालबाग, आगरा के लिए दयालबाग एजुकेशनल इंस्टीट्यूट, दयालबाग, आगरा में प्रकाशित और  
आर.के. ऑफसेट प्रोसेस, एम.-28, नवीन शाहदरा, दिल्ली-32 में मुद्रित। संपादक : डॉ. प्रेमशंकर सिंह/डॉ. वृजराज सिंह

---

शोधश्री, 2019 / 1

## अनुक्रम

संपादकीय	3
भोजपुरी और राजस्थानी लोकगीतों की समान भाव भूमि / डॉ. महीपालसिंह राठौड़	4
केदारनाथ मिश्र 'प्रभात' प्रणीत 'कैकेयी' महाकाव्य में नूतन उद्भावना / डॉ. जयश्री बंसल	10
प्रासंगिकता का सवाल और भक्ति काल / डॉ. क्रान्ति बोध	14
आधुनिकतावादी संत्रास के व्याख्याकार : विजयदेव नारायण साही / मृत्यंजय	19
मोहन राकेश के नाटकों में आधुनिकता एवं उत्तर आधुनिकता की अभिव्यक्ति / डॉ. पाण्डव कुमार	24
राही मासूम रज़ा के 'आधा गाँव' उपन्यास में दलित विमर्श / मोनिका कुमारी	30
बागड़ी समाज के रीति-रिवाज व विभिन्न रस्में / डॉ. राजेन्द्र कुमार सेन	33
शृंखला की कड़ियाँ : स्त्री-मुक्ति का दस्तावेज / शुभम यादव	40
समकालीन हिंदी कविता की भाषा संरचना / ज्योति यादव	43
राजस्थान में आजादी के बाद कला यात्रा / डॉ. मोहन लाल जाट	46
स्त्री विमर्श और महादेवी वर्मा का काव्य / डॉ. कामिनी	50
पद्मावत में लोकतत्व और भारतीय संस्कृति / मंजू चौरसिया	53
हिन्दी रंगालोचन का स्वरूप / डॉ. अल्पना त्रिपाठी	56
सर्वेश्वर दयाल सक्सेना की काव्ययात्रा / डॉ. अवधेश त्रिपाठी	64
दलित साहित्य की वैचारिक बहस के कुछ आयाम / डॉ. दीपक सिंह	74
हिन्दी कथा साहित्य में ग्राम / डॉ. रंजना पाण्डेय	79
गालिब : आधुनिक चेतना / डॉ. नमस्या	84
मैत्रेयी पुष्पा के 'विज्ञान' उपन्यास में परिलक्षित स्त्री पुरुष संबंध / अलका यादव	87

## स्त्री विमर्श और महादेवी वर्मा का काव्य

डॉ. कामिनी \*

समकालीन समय में स्त्री विमर्श स्त्री मुक्ति के संदर्भ में पारिभाषित किया जाता है। पुरुष शासित समाज में स्त्री को जो रूप दिया गया है उसके साथ अपनी सहमति-असहमति और विरोध के साथ स्वयं की सत्ता का अहसास ही स्त्री विमर्श है जैसा कि डॉ. रामपाल गंगवार लिखते हैं—“स्त्री विमर्श का दर्शन वस्तुतः स्त्री की मुक्ति से संबंधित है यह मुक्ति मानसिक-भौतिक एक साथ है। मानसिक मुक्ति का संबंध सांस्कृतिक मुक्ति से है, सामाजिक सोच में परिवर्तन से है।”

विमर्श के रूप में ‘स्त्री-विमर्श’ उत्तर आधुनिकतावादी दौर के साथ शुरू होता है। विमर्श को शक्ति या सत्ता को अधिकृत करने का साधन माना जाता है। स्त्री का पुरुष वर्चस्व से मुक्त होकर पुरुषों के बराबर राष्ट्रीय और सामाजिक विकास में अपनी भूमिका निर्धारित करने के लिए शक्ति सम्पन्न हो सकना ही स्त्री विमर्श है वस्तुतः स्त्री के जागृत होने को ही स्त्री विमर्श कहा जा सकता है। भारत में नारी जागरण की शुरुआत नवजागरण के साथ होती है। उस समय स्त्री की स्थिति का प्रश्न महत्त्वपूर्ण था। जन्म से लेकर मृत्यु तक वह पुरुष की इच्छा पर निर्भर थी। नवजागरण के दौरान महात्मा ज्योतिबाबा फुले और उनकी पत्नी सावित्री देवी फुले ने न केवल स्त्रियों की सामाजिक गुलामी के विरुद्ध आवाज उठाई, बल्कि उन्होंने शिक्षा के अधिकारों का भी समर्थन किया।

स्त्री विमर्श की दृष्टि से सन् 1882 का वर्ष स्त्री जागरण में महत्त्वपूर्ण स्थान रखता है क्योंकि इसी वर्ष महाराष्ट्र की क्रांतिकारी महिला ताराबाई शिन्दे की पुस्तक ‘स्त्री-पुरुष तुलना’ छपी, जिसमें स्त्री-दृष्टि से महाराष्ट्र की पितृसत्तात्मक समाज व्यवस्था की आलोचना की गई है। इसी वर्ष हिन्दी में भी एक पुस्तक छपी—‘सीमंतनी उपदेश’। इसकी लेखिका को अज्ञात हिन्दू औरत माना गया है। इस पुस्तक में नारी जागरण और उसकी, आजादी की आवाज अत्यन्त बुलन्द स्वर में उठाई गई है—सीमंतनी उपदेश में विधवा जीवन, सती-प्रथा, पतिव्रता

तथा सतीत्व सम्बन्धी भ्रामक धारणाओं का खण्डन किया गया है। भारतीय स्त्री की पराधीनता की पीड़ा का जिक्र उनके इस कथन से स्पष्ट है—“अगर इस दुनिया में कुछ खुशी है तो उन्हीं को है जो अपने तई आजादी रखते हैं। हिन्दुस्तानी औरतों को तो आजादी किसी हालत में नहीं हो सकती। बाप, भाई, बेटा, रिश्तेदार- सभी हुकुमत रखते हैं। मगर जिस कद्र खाविन्द जुल्म करता है उतना कोई नहीं करता, लौंडी तो यह सारी उग्र सब ही की रहती है, पर शादी करने से बिल्कुल जरखरीद हो जाती है। इस दुनिया में चाहे बादशाहत की नियामत मिले और आजादी न हो, नर्क के बराबर है।”

बीसवीं सदी से दूसरे दशक में नारी जागरण का यह स्वर और मुखर हुआ और स्त्री जीवन से जुड़ी विभिन्न पत्रिकाओं का प्रकाशन प्रारम्भ हुआ। हिन्दी नवजागरण के अग्रदूत भारतेन्दु ‘बालाबोधिनी’ पत्रिका निकाल कर और ‘नारी नर सम होहिं’ कहकर पहले ही नारी जागरण की वकालत कर चुके थे। इसी के बाद महादेवी वर्मा भी चाँद पत्रिका के साथ हिन्दी साहित्य के परिदृश्य पर आती हैं। महादेवी वर्मा चाँद से घनिष्ठ रूप से जुड़ी हुई हैं थीं, पहले एक कवि के रूप में और बाद में एक सम्पादक के रूप में। सन् 1935 में चाँद का विदुशी अंक महादेवी वर्मा के संपादन में निकला। इसके माध्यम से उन्होंने स्त्रियों को आत्म सजग करने का प्रयास किया।

महादेवी के सन्दर्भ में विचार करते हुए आलोचक अक्सर उनके गद्य एवं पद्य को अलग-अलग करके आँकते हैं और विश्लेषण मुख्यतः उनके कविता-प्रसंग के अन्तर्मुखता, वैयक्तिकता, विरह, वेदना जैसे शब्दों के इर्द-गिर्द घूमता रह जाता है महादेवी का व्यवस्था के खिलाफ आक्रोश और परिवर्तन की माँग करता हुआ गद्य हाशिये पर चला जाता है जो महादेवी के जीवन का देखा, झेला एवं अनुभव किया यथार्थ भी था। यह खण्डित आलोचना दृष्टि सीधे तौर पर मान लेती है कि “अपनी हरसौंस का इतिहास लिख डालने को आतुर कवयित्री गद्य में तो अपनी

सहायक प्राध्यापक हिन्दी, शासकीय नवीन कन्या महाविद्यालय बैकुंठपुर

सामाजिक भावना को व्यक्त करती है और कविता में अपने विशिष्ट आत्मीय जीवन-प्रसंगों को।” महादेवी वर्मा की कविता के मूल्यांकन के सन्दर्भ में प्रायः एक आलोचनात्मक पूर्वाग्रह दिखाई देता है कि महादेवी दुख की, पीड़ा की, वेदना की कवयित्री हैं। महादेवी की कविता में रहस्यवाद की खोज की जाती है। उस दुख, पीड़ा वेदना के पीछे भारतीय नारी का जो चित्र महादेवी जी ने खींचा उसकी ओर प्रायः आलोचकों का ध्यान नहीं जाता। उनके गद्य में जो स्पष्ट है, वही उनकी कविताओं में छिपा हुआ है। भारतीय स्त्री के जीवन के अनुभवों, आकांक्षाओं की अभिव्यक्ति वे श्रृंखला की कड़ियाँ में स्पष्ट रूप से करती हैं तो उनके काव्य को उससे अलग करके कैसे देखा जा सकता है उनके मूल्यांकन के सन्दर्भ में पन्त जी के विचार द्रष्टव्य हैं— “उन्हें हमें मध्य युगों की पीठिका से हटाकर इसी युग के बाहरी-भीतरी बौद्धिकी, हार्दिक, सामाजिक तथा सांस्कृतिक, सशक्त, मर्मम्यशी, लोकव्यापी प्रभावों की संश्लिष्ट संग्रहित भूमिका पर खड़ा कर देखना चाहिए।”<sup>14</sup>

महादेवी के काव्य में जो आँसू हैं, वह किसी कमजोरी के पर्याय के रूप में नहीं आते, ये आँखों के वे उजले आँसू हैं, जिससे धुलकर जीवन नया अर्थ पाता है। इस आँसू या वेदना का अर्थ पराजय या पलायन नहीं है अपितु वह नारी के दुखते कष्टों की, नारी अवचेतना की स्पष्ट अभिव्यक्ति है। प्रो. मैनेजर पाण्डेय के अनुसार—“महादेवी वर्मा की कविता में जो दुख, वेदना, निराशा और अंतर्मुखता है, वह सब उनके समय की और आज की भी भारतीय स्त्री के जीवन की वास्तविकताएं हैं और सम्भावनाएं भी।”<sup>15</sup>

महादेवी के नारी-मन ने समाज से यह छूट पहली बार ली कि यह कह सके कि ‘उनसे कैसे छोटा है मेरा यह भिक्षुक जीवन’।<sup>16</sup> प्रियतम को बराबरी में पाना-अपनाना महादेवी को मान्य है, लेकिन पुरुषवाद के प्रति खुला विद्रोह और हिकारत का भाव। महादेवी नारी की मुक्ति, उसकी स्वतंत्रता के लिए संघर्ष करती हैं। नारी-मुक्ति के लिए महादेवी के काव्य में तीव्र बेचैनी है नारी जागरण का सामाजिक विस्तार उनकी चेतना के कोने-कोने में दहक रहा है। तभी वह कह सकी हैं—

“कोर का प्रिय आज आज पिंजर खोल दो/हो उठी है चंचु झूकर/तीलियाँ भीवेणु सस्वर/वन्दिनी स्पन्दित व्यथा ले/सिहरता जड़ मौन पिंजर/आज जड़ता में इसी की बोल दो।”

यह जड़ता उस नारी-जीवन की जड़ता है, जो सदियों से पुरुष -वर्चस्व के भीतर जीती आई है। महादेवी की पीड़ा व्यक्तिगत न होकर सामंती जंजीर में जकड़ी सामाजिक रूढ़ियों से ग्रस्त नारी जीवन की पीड़ा है। छायावादी काव्य में भारतीय नारी जीवन की सिसकती पीड़ा को जोड़ देना महादेवी जी के

काव्य का मौलिक योगदान है भारतीय समाज में परतंत्र नारी के करुणा का भी यह प्रतीक है। कवयित्री ने नारी की भावनाओं की अभिव्यक्ति अपनी कविताओं में अनेक रूपों से की है।

महादेवी जी के काव्य में पुरुष वर्चस्ववाद से घिरी अकेली नारी की पीड़ा है। “महादेवी जी के आँसुओं में व्याप्त यातना में नारी-व्यथा की वास्तविकता का वह इतिहास मौजूद है, जिसे अभी पुरुष प्रधान वर्चस्ववाद में ठीक से लिखा नहीं जा सका है। इस नारी दमन की कथा-व्यथा को भविष्य में स्त्री-विमर्श अपने ढंग से अवश्य लिखेगा और इन गीतों के दमित अर्थ का मिशेल फूको की शक्ति सत्ता थियरी से मदद लेकर नया पाठ नया विमर्श या साक्ष्य प्रस्तुत करेगा।”<sup>18</sup>

महादेवी जी की कविता में अँधेरा बहुत बार आता है, लेकिन इस अँधेरे के साथ-साथ एक दीपक भी आता है, जो महादेवी जी को बहुत प्रिय है। जैसा कि वह ‘दीपशिखा’ की भूमिका में कहती हैं—आलोक मुझे प्रिय है पर दिन से अधिक रात का दिन में तो अंधकार से उनके संघर्ष का पता ही नहीं चलता, परंतु रात में हर झिलमिलाती लौ योद्धा की भूमिका में अवतरित होती है। उनके इस कथन से उनकी संघर्षप्रियता का पता चलता है। उनकी कविता पर बार-बार जो पलायन का आरोप लगाया जाता है, वह संघर्ष की स्थिति में कैसे सम्भव है। महादेवी जी के यहाँ अंधकार से संघर्ष करने वाला दीपक भारतीय स्त्री की तरफ है। जो निरन्तर अपने अस्तित्व के लिए जूझ रही हैं। प्रो. मैनेजर पाण्डेय के अनुसार—“उनकी कविता में अंधकार से आलोक का जो संघर्ष है, वह भारतीय स्त्री के जीवन की पराधीनता से स्वाधीनता की आकांक्षा का संघर्ष है।”<sup>19</sup>

महादेवी जी के यहाँ संघर्ष नारी-जागरण के रूप में आता है। महादेवी जी ने अपनी पुस्तक ‘श्रृंखला की कड़ियाँ’ में जो कुछ लिखा, वह किसी स्त्री-केन्द्रित चिन्तन का पश्चिमी अनुकरण नहीं था और न ही वे स्त्री शोषण का सुसम्बद्ध इतिहास लिखने की कोशिश कर रहीं थी बल्कि उनके इस विमर्श का केन्द्र भारतीय स्त्रियों की दयनीय स्थिति थी। स्त्रियों की इस दयनीय स्थिति और उस स्थिति से संघर्ष का चित्रण महादेवी जी अपनी कविता में करती हैं। यह संघर्ष सामाजिक-राजनीतिक समस्याओं के प्रति सजगता और नर-नारी की समानता के भाव के रूप में आता है। वह नारी के भोगवाद और रीतिवाद का पर्याय मानी जाती थी, वह महादेवी के काव्य में एक सशक्त नारी के रूप में आती है, तभी महादेवी जी कहती हैं कि—

“चिर सजग आँखे उनींदी आज कैसा व्यस्त बाना!

जाग तुझको दूर जाना/कह न ठंडी साँस में, अब भूल वह जलती कहानी/आग हो उर में तभी दृग में सजेगा आज पानी/

र भी तेरी बनेगी मानिनी जय की पताका/राख क्षणिक पतंग की है अमर दीपक की निशानी/है तुझे अंगार-शय्या पर मृदुल कलियाँ बिछाना/जाग तुझको दूर जाना।<sup>10</sup>

महादेवी जी की कविताओं में आँसू इसीलिए है क्योंकि उर में आग है। यह आग ही स्त्री-जागरण में सहायक है। प्राचीन काल से सामंती बंधनों में जकड़ी नारी अपनी मुक्ति के लिए छटपटा रही है। वह सदियों से एक निश्चित सीमा में कैद रही है तभी वह कह सकी है कि—“तोड़ दो यह क्षितिज मैं भी देख लूँ उस ओर क्या है?”<sup>11</sup> उस ओर के संसार को देख लेने की लालसा नारी को जागृत करने में सहायक रही है। अब वह इतनी हिम्मत कर सकी है कि क्षितिज को अर्थात् उस रहस्यमय आवरण को तोड़ने की बात कर रही है, जिसमें वह सदियों से आवद्ध रही है।

महादेवी जी के यहाँ स्वतंत्र नारी-व्यक्तित्व की व्यंजना के संकेत हैं। पुराने जर्जर मूल्यों से पैदा हुए संस्कारों के प्रति वह क्रांतिकारी है तभी अपने प्राणों का दीप जलाकर वह दीवाली मनाती है -

“अपने इस सूनूपन की मैं हूँ रानी मतवाली  
प्राणों का दीप जलाकर करती रहती दीवाली”<sup>12</sup>

महादेवी जी के यहाँ जो आत्माभिव्यक्ति की आकांक्षा है, वह आत्मप्रसार करना चाहती है उनके काव्य में आये हुए चातक, वादल और दीपक सभी मुक्ति के प्रतीक हैं। आत्म प्रसार में कवयित्री सारे बंधनों को तोड़ देना चाहती है महादेवी के काव्य में प्रिया, प्रेयसी, सजनी, सखी, प्रियतम से ऊँचे आसन पर बैठी दिखाई देती है, जो नारी जागरण का प्रतीक है। महादेव जी के इस नारी चिंतन के बारे में प्रो. कृष्णदत्त पालीवाल का कथन द्रष्टव्य है—“इन नारी-मन के चिंतन और चिति में जो प्रभु या प्रिय या करुणानिधि बसा हुआ है, उसमें भी पति का मध्ययुगीन आतंक नहीं है। आधुनिक जीवन और उस चिंतन से उत्पन्न बराबरी का समानता, बंधुता का भाव है जहाँ कहीं बराबरी का भाव न होने का अहसास मात्र हुआ है वहाँ पर गहरा आक्रोश शब्दमूर्त हुआ है। ‘उनसे कैसे छोटा है मेरा यह भिक्षुक जीवन’ जैसे ललकार-भरे कथन हैं प्राचीन बाल-विवाह और स्वयं का बाल-विवाह उनमें स्थायी दर्द बनकर उठता है नारी-पुरुष को वे मात्र दाम्पत्य बंधन में नहीं जकड़ती, बल्कि दांपत्येतर रिश्तों में बाँधती है। इस तरह भारतीय नारी का संचित-दमन-संत्रास-कुंठा इस काव्यात्मकता में विरेचन पाता है—पावनता जनित विवेक के साथ।”<sup>13</sup>

महादेवी वर्मा ने जो चिंतन अपने ग्रन्थ शृंखला की कड़ियाँ में किया है, वही उनके काव्य में भी देखा जा सकता है। काव्य और गद्य को अलग-अलग करके नहीं देखा जा

सकता। उनकी ‘शृंखला की कड़ियाँ’ अगर गद्य में स्त्री-विमर्श की शुरुआत है जैसा कि शिव कुमार मिश्र जी कहते हैं—“महादेवी की शृंखला की कड़ियाँ सही मायने में स्त्री-विमर्श को शुरू करने वाली किताब है। हमारे समाज में स्त्री की हैसियत उसकी अस्मिता से जुड़े जो तमाम मुद्दे हैं, वे सब महादेवी ने इस किताब में उठाये हैं।”<sup>14</sup> तो उनका काव्य भी भारतीय स्त्री की मुक्ति की छटपटाहट का काव्य है। एक स्त्री होकर उस युग में महादेवी जी ने जो कुछ रचा वह एक नारी के द्वारा नारी की व्यथा का चित्रण था। उस युग में बहुत स्पष्ट नहीं कहा जा सकता था, इसलिए महादेवी जी ने कई बार छिपाकर कहना चाहा है, जिसके लिए उन पर रहस्यवाद के आवरण का आरोप लगाया जाता है।

### संदर्भ-ग्रंथ-सूची

1. मुक्तिबोध : कामायनी एक पुनर्विचार, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, 1991 पृ. 115
2. डॉ. रामपाल गंगवार : समकालीन प्रश्न और साहित्य चिंतन, राका प्रकाशन, इलाहाबाद, प्रथम संस्करण-2007 पृ. 48
3. सं. डॉ. धर्मवीर : सीमन्तनी उपदेश, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली, संस्करण-2006 पृ. 84
4. सं. परमानन्द श्रीवास्तव : महादेवी, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद 2003 पृ. 20
5. सं. इन्द्रनाथ मदान : महादेवी, राधाकृष्ण प्रकाशन, नई दिल्ली-2005 पृ. 14
6. प्रो. मैनेजर पाण्डेय : अनभे साँचा, पूर्वोदय प्रकाशन, दिल्ली पृ. 178
7. सं. प्रो. निर्मला जैन : महादेवी साहित्य समग्र-1 वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली-2000 पृ. 49
8. महादेवी वर्मा : सान्ध्यगीत, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद, 2002 पृ. 64
9. प्रो. कृष्णदत्त पालीवाल : नवजागरण और महादेवी वर्मा का रचना कर्म: स्त्री विमर्श के स्वर, किताब घर प्रकाशन, दिल्ली-2010 पृ. 45
10. प्रो. मैनेजर पाण्डेय : अनभे साँचा, पूर्वोदय प्रकाशन, दिल्ली पृ. 179
11. महादेवी वर्मा : सान्ध्यगीत, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद-2002 पृ. 62-63
12. वही पृ. 60
13. सं. प्रो. निर्मला जैन : महादेवी साहित्य समग्र-1, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली-2000 पृ. 41
14. प्रो. कृष्णदत्त पालीवाल : नवजागरण और महादेवी वर्मा का रचना कर्म: स्त्री विमर्श के स्वर, किताब घर प्रकाशन, दिल्ली 2010 पृ. 96
15. गवेशणा पत्रिका (स्त्री की भाषा/महादेवी के संदर्भ में) अंक 87, 2007 पृ. 167